ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ मासिक

अगस्त-२०२०

अगस्त-२०२० ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

स्वातन्त्र्य भाव ही जीवों के,
जीवन का मानो गहना है।
पराधीन कोई न रहे,
ऋषि दयानन्द का कहना है।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० १०६

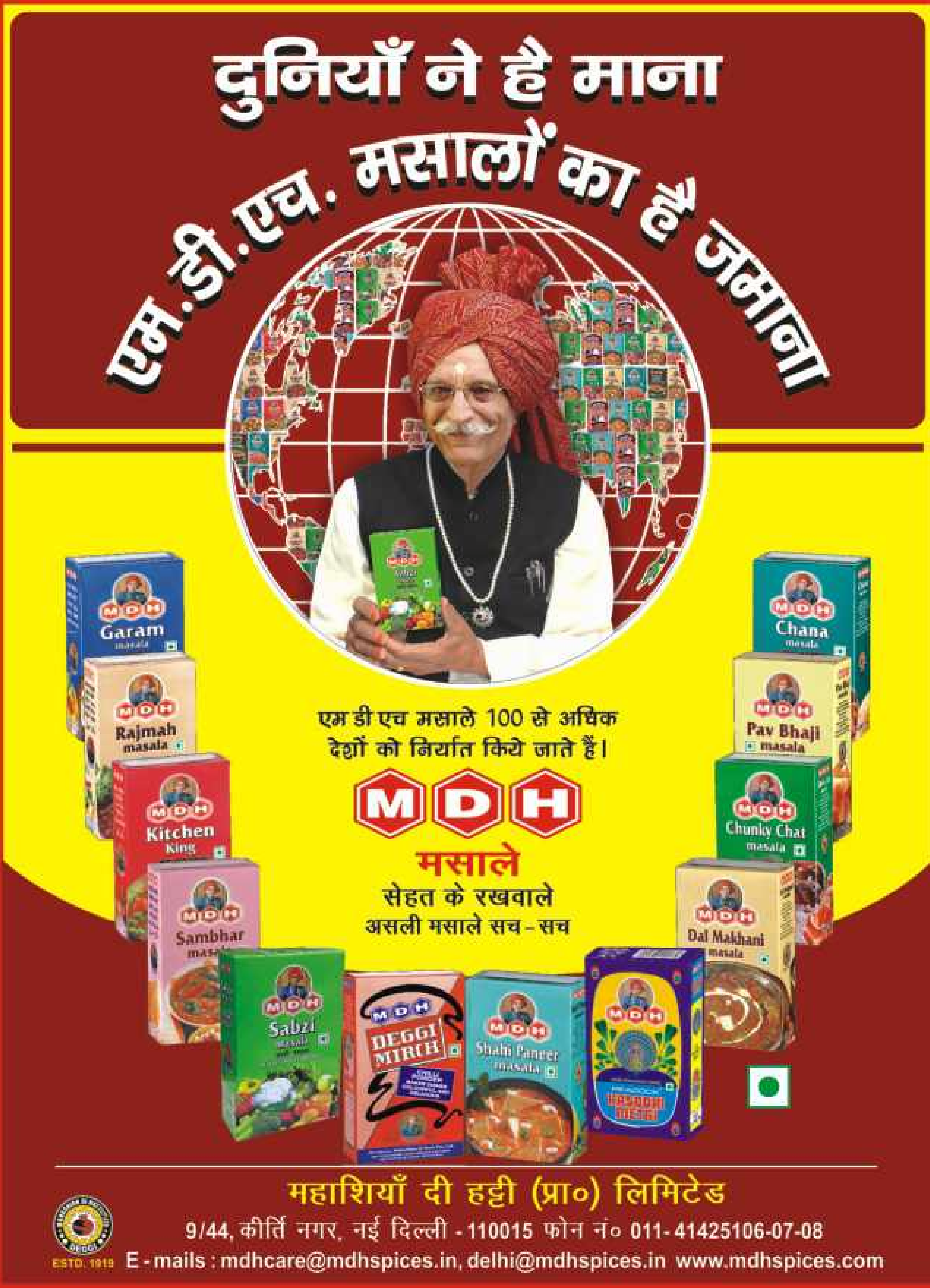
दुनियाँ ने है माना
एम.डी.एच. मसालों का है ज़माना
Garam masala
Rajmah masala
Kitchen King
Sambhar masala
Sabzi masala
MDH
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
Chana masala
Pav Bhaji masala
Chunky Chat masala
Dal Makhani masala
एम डी एच मसाले 100 से अधिक
देशों को निर्यात किये जाते हैं।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
ESTD. 1919
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1000
आजीवन	1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	400 रु.	$ 100
वार्षिक	100 रु.	$ 25
एक प्रति	10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२१
भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी
विक्रम संवत् २०७७
दयानन्दाब्द १९६

August - 2020

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८
हलचल २९

०४ वेद सुधा
१५ जीवन-विकास के नायाब पहलू
१८ हृदय को हृदय क्यों कहते हैं?
२२ पाकिस्तान बनाना मूर्खता थी
२४ कथा सरित- रानी सारंधा
२७ स्वास्थ- अवसाद
३० सत्यार्थ पीयूष- कर्म-फल ....

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ अंक - ०४

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 07976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

उसके गुप्तचर दोनों लोकों को देखते हैं

परिस्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके।
ऋतावानः कवयो यज्ञधीरांः प्रचेतसो य इषयन्त मन्म।। - अथर्व० ४/१८/६

अर्थ- (वरुणस्य) वरुण भगवान के (स्मदिष्टाः) प्रशंसनीय गतिवाले (स्पशः) गुप्तचर (सुमेके) वर्षादि की सुन्दर वृष्टि करने वाले (उभे) दोनों (रोदसी) द्युलोक और पृथिवीलोक को (परिपश्यन्ति) देखते रहते हैं (ये) जो गुप्तचर (ऋतावन) सत्यशील हैं (कवयः) गहरे ज्ञानी हैं (प्रचेतसः) जो उत्कृष्ट ज्ञान वाले हैं और जो (मन्म) ज्ञान को (इषयन्त) मनुष्यों तक पहुँचाते हैं।

वरुण भगवान् ने द्युलोक और पृथिवीलोक में अपने गुप्तचर छोड़ रखे हैं। ये गुप्तचर प्रशंसनीय गति वाले हैं। कोई छिपे से छिपा स्थान ऐसा नहीं है जहाँ ये गुप्तचर न पहुँच जाते हों। द्युलोक और पृथिवीलोक में, अर्थात् सारे ही विश्व ब्रह्माण्ड में कहीं भी रहने वाले प्राणी जो कुछ सोचते-विचारते और करते हैं उस सबको ये वरुण के गुप्तचर जान लेते हैं। भगवान् में जो सबके अच्छे और बुरे, पुण्य और पाप कर्मों को जान लेने और उनके अनुसार सुख और दुःख देने की शक्ति है, उसी को मंत्र में अलंकारिक रूप में प्रभु के गुप्तचर कहा है। वेद में अन्यत्र भी प्रभु की इस शक्ति का गुप्तचरों के रूप में अलंकारिक वर्णन किया गया है। प्रभु के इन गुप्तचरों की आँखों से कोई बच नहीं सकता। प्रत्येक व्यक्ति के पाप और पुण्य प्रभु को पता लग जाता है। पाप का फल दुःख और पुण्य का फल सुख प्रत्येक को मिलकर रहेगा। कहीं भी छिपकर हम कोई कर्म क्यों न करें हम उसके फल से बच नहीं सकते। प्रभु के गुप्तचरों को सर्वत्र विचर रहा जानकर, प्रभु की सर्वदर्शी दृष्टि को सर्वव्यापक जानकर, हमें पाप से बचना चाहिए और पुण्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

मंत्र के उत्तरार्द्ध में इन गुप्तचरों के बड़े सुन्दर विशेषण दिए गए हैं। इनसे कर्मफल के सिद्धान्त पर बड़ा सुन्दर प्रकाश पड़ता है। हमने अभी कहा है कि गुप्तचरों का यह वर्णन अलंकारिक है। वस्तुतः ये गुप्तचर भगवान् से भिन्न और कुछ नहीं हैं। भगवान को ही, उनमें सर्वदर्शिका शक्ति रहने के कारण इस अलंकारिक वर्णन द्वारा गुप्तचर कहा गया है इसलिए गुप्तचरों के इन विशेषणों के अर्थों पर ध्यान दें और देखें कि उनसे कर्मफल के सिद्धान्त पर क्या प्रकाश पड़ता है-

'ऋतावानः'- ये गुप्तचर सत्यशील हैं। जो बात जैसी हुई है और उसे वैसी ही ये जानते हैं। अपनी ओर से घटा बढ़ी करके ये अपने स्वामी को मिथ्या समाचार नहीं देते इसलिए इनका स्वामी जब प्राणियों को उनके कर्मों का फल देने लगता है तब जिसने जो कर्म जितना किया होता है, उसके अनुसार उसे जितना फल मिलना चाहिए ठीक उतना ही मिलता है। दूसरे शब्दों में प्रभु सत्यशील हैं। वे प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक कर्म को ठीक-ठीक रूप में जानते हैं और प्रत्येक कर्म के अनुसार जिसे जितना फल मिलना चाहिए ठीक उतना ही फल उसे देते हैं। वे यों ही किसी को उसके कर्म को ध्यान में न रखते हुए कम-अधिक फल देकर मिथ्या व्यवहार नहीं कर सकते। एक शब्द में- वे किसी को उसके कर्मों का फल देते हुए उसके साथ पूर्ण न्याय का वर्ताव करते हैं।

'प्रचेतसः'- वे प्रकृष्ट ज्ञानी हैं। प्रत्येक क्षेत्र का उनके पास बहुत ऊँचा ज्ञान है। 'ऋतावानः' विशेषण द्वारा गुप्तचरों के सत्य को ज्ञात करने के गुण का वर्णन किया गया था। सत्य बिना ज्ञान के पता नहीं लग सकता। जितना हमारा ज्ञान अधिक होगा उतना ही हम सत्य और असत्य का विवेक अधिक अच्छी प्रकार से कर सकेंगे। जब वरुण के गुप्तचर सत्यशील हैं तब उन्हें 'प्रचेताः' होना ही चाहिए। बिना ज्ञान के कोई सत्यशील नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में इस विशेषण का भाव यह है कि भगवान् में सत्यशील न्यायकारी होने के लिए आवश्यक गुण 'ज्ञान' भी है।

'कवयः'- वे बहुत गहरा ज्ञान रखने वाले ज्ञानी हैं। वरुण के गुप्तचरों में न केवल ज्ञान है प्रत्युत् गहरा ज्ञान है। कवि का शब्दार्थ क्रान्तदर्शी होता है। जो पदार्थ की तह तक का ज्ञान रखता हो, सब आवरणों को भेदकर जिसकी दृष्टि पदार्थों के असली रूप को

जान लेती हो, उसे क्रान्तदर्शी या कवि कहते हैं। वरुण के गुप्तचर ऐसे ही क्रान्तदर्शी ज्ञानी हैं। 'प्रचेतसः' विशेषण द्वारा उनमें ज्ञान की अधिकता बताई गई थी। 'कवयः' विशेषण द्वारा उनमें बुद्धि की सूक्ष्मता, बुद्धि की गहराई तक पहुँचने की मर्मस्पर्शिता की शक्ति बताई गई है। वे जहाँ ज्ञानी हैं, वहाँ उनमें बुद्धि की अन्तर्भेदिता भी है। इसलिए वे सत्यशील होकर सबके साथ न्याय कर सकने में समर्थ होते हैं।

'यज्ञधीराः'– उनकी बुद्धियाँ यज्ञ में लगी रहती हैं। यज्ञ लोकोपकार के कामों को कहते हैं। प्रभु के गुप्तचर यज्ञ में अर्थात् लोकोपकार के कामों में अपनी बुद्धियों को लगाये रखते हैं। वे जो अपने स्वामी को भाँति-भाँति के समाचार लाकर देते हैं उसका प्रयोजन लोगों को सताना नहीं होता। उसका प्रयोजन तो वस्तुतः लोकोपकार होता है। लोगों को यह पता रहे कि उनके आचरणों और संकल्प-विकल्पों को प्रभु के गुप्तचर देख रहे हैं, इसलिए वे भूलकर भी पापाचरण न करें और किसी पर अन्याय-अत्याचार न कर सकें, कोई किसी को किसी प्रकार का क्लेश न दे सके, इस प्रयोजन से प्रभु के गुप्तचर सर्वत्र फिरते हैं। दूसरे शब्दों में तात्पर्य यह है कि प्रभु ने जो कर्मफल की व्यवस्था रच रखी है उसका प्रयोजन वस्तुतः लोकोपकार है। पापचरण का, बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलकर रहेगा, ऐसा जान लेने पर मनुष्य किसी पर अन्याय अत्याचार करने और किसी के जीवन को दुःखी बनाने से बचते रहेंगे और इस प्रकार जन समाज बड़ी व्यवस्थित और सुखपूर्ण रीति से चल सकेगा। जिन व्यक्तियों को भगवान् उनके बुरे कर्मों का फल दुःख दे रहे होते हैं उन पर भी प्रभु एक प्रकार से उपकार ही कर रहे होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहता है। पूर्ण सुख भगवान् की प्राप्ति से ही हो सकता है। भगवान् की प्राप्ति हमें तब हो सकती है जब हम अपने आपको पाप से, दुराचरण से, बुरे कर्मों से सर्वथा दूर करके पूर्ण रूप से निष्पाप, निष्कलंक और निर्मल बना लें। पवित्र बनने में और पवित्र बनने द्वारा भगवान् की प्राप्ति का अधिकारी बनने में सहायता देता है इसलिए प्रभु हमें कर्मफल देने की जो व्यवस्था चला रहे हैं वह लोकोपकार के लिए चला रहे हैं। प्रभु का दण्ड विधान भी एक यज्ञ है।

'मन्म इषर्यन्त'– वे मनुष्यों तक ज्ञान पहुँचाने का एक साधन हैं। हम अपने आपको और अपने आसपास के मनुष्यों और पशु-पक्षियों में से किसी को जब किसी दुःख से पीड़ित देखते हैं तब हमारे मन में यह विचार उठता है कि हमने या इस प्राणी ने पता नहीं कौन सा पाप कर्म किया है जिसका फल यह दुःख भोगना पड़ रहा है। यह दुःख-भोग बताता है कि कोई न कोई पाप अवश्य हुआ है। नहीं तो न्यायकारी भगवान् बिना पाप के यह दुःख नहीं दे सकते थे। यदि हम भविष्य में दुःख से बचना चाहते हैं तो हमें सभी पापों से बचना चाहिए। यह वर्तमान दुःख न जाने किस पाप-कर्म का फल है इसलिए भविष्य में दुःखों से बचने का यही उपाय है कि हम सभी प्रकार के पाप-कर्मों को त्याग दें। इस प्रकार उत्पन्न हुए विचार द्वारा जब हम अपने पापाचरणों को त्याग देते हैं तब निष्पाप होकर प्रभु के दर्शन पाकर मोक्षानन्द उपभोग करने के अधिकारी बन जाते हैं और हमारा संसार भी सुखपूर्व चलता है। इस प्रकार प्रभु की कर्मफल-व्यवस्था हमारे अन्दर पाप से बचने का विचार उत्पन्न करके हमें एक प्रकार से पवित्र बनने का ज्ञान देती है। इसके अतिरिक्त कर्मफल-व्यवस्था पूर्वजन्म की सत्ता, जीवों का अनादित्व, जीवों में स्वतंत्र कर्तृत्व, परमेश्वर और प्रकृति का अनादित्व आदि अनेक विषयों का ज्ञान कराती है। कर्मफल की व्यवस्था पर विचार करना आरम्भ कीजिए और आप देखेंगे कि हमें ये सारी बातें माननी आवश्यक हो जायेंगी।

सूक्त में प्रभु की महिमा का वर्णन चल रहा है। प्रस्तुत मंत्र में प्रभु ने कर्मफल की जो अद्भुत व्यवस्था बाँध रखी है उसकी ओर ध्यान खींचकर उनकी महामहिमा का अनुभव कराया गया है। इसके अतिरिक्त मंत्र में द्युलोक और पृथिवीलोक को 'सुमेके' अर्थात् वर्षादिक की सुन्दर वृष्टि करने वाले कहकर प्रभु की महिमा की ओर निर्देश कर दिया गया है। ये द्युलोक और पृथिवीलोक हमारे लिए जो अनेक प्रकार के मंगलों की वर्षा कर रहे हैं, वह सब प्रभु की ही तो महिमा है। उनकी महिमा के बिना यह द्यौ और यह पृथिवी 'सुमेके' मंगलों की वर्षा करने वाली कहाँ बन सकती थी?

पाठक यह भी देखेंगे कि मंत्र में प्रभु के अलंकारिक गुप्तचरों का वर्णन कर राष्ट्र के गुप्तचरों का भी कैसा आदर्श हो, वर्णन कर दिया गया है। उन्हें अपने राजा तक राष्ट्र और परराष्ट्र के सब समाचारों का ज्ञान पहुँचाने वाला तो होना ही चाहिए। इसके साथ ही उन्हें 'ऋतावान्' 'प्रचेतसः', 'कवयः' और 'यज्ञधीराः' भी होना चाहिए तभी वे आदर्श गुप्तचर हो सकेंगे।

हे मेरे आत्मन्। प्रभु की अटल कर्मफल-व्यवस्था और साथ ही उनके पूर्ण ज्ञान, पूर्ण न्याय और पूर्ण मंगलमय प्रयोजन में विश्वास रखके सत्यकर्मों के पथ पर आगे बढ़ता चल। तेरा अवश्य कल्याण होगा।

– आचार्य प्रियव्रत
(साभार- वरुण की नौका)

आत्म निवेदन

दस-दस को एक ने मारा

१५ जून २०२०,जब से गलवान घाटी में, चीन के सैनिकों ने धोखे से भारत के सैनिकों पर आक्रमण किया है तब से अनेक बुद्धिजीवी चीन तथा भारत के सैनिकों की संख्या तथा शस्त्र-अस्त्रों की संख्या का विश्लेषण कर रहे हैं। स्पष्ट है कि जहाँ तक संख्या की बात है चीन निःसंदेह इसमें आगे है। पर युद्ध संख्या से नहीं रणकौशल और साहस से जीता जाता है, जिसमें चीन तो क्या विश्व की कोई भी सेना भारतीय सैनिकों के समक्ष बौनी ही ठहरेगी, इसमें सन्देह नहीं। इतिहास हमारी बात का पुरजोर समर्थन करता है। भारतीय रणबांकुरों ने सदैव अपना शीश हथेली पर रखकर दुश्मनों के दांत खट्टे किये हैं।

प्रायः १९६२ के चीन युद्ध की बात और उसमें भारत की हार की चर्चा की जाती है। धोखे से हुए इस आक्रमण को पीठ में छुरा भोंकने के अतिरिक्त कुछ नहीं कह सकते। फिर भी इस अप्रत्याशित हमले में अनेक मोर्चों पर चीन का वही हाल हुआ जो १५ जून २०२० को गलवान घाटी में हुआ। कम संख्या में होते हुए भी 'दस-दस को एक ने मारा' की कहावत को चरितार्थ करते हुए भारतीय जवानों ने, अपने से कई गुना चीनी सैनिको उनकी धोखाधड़ी का फल चखाया। इस अवसर मुझे १९६२ के युद्ध के अन्तर्गत ही 'रेजांग ला दर्रा' के संघर्ष का स्मरण हो रहा है जिसमें शौर्य का अप्रतिम, अद्वितीय प्रदर्शन हमारे जवानों द्वारा किया गया।

रेजांग ला युद्ध उस लड़ाई की गाथा है, जिसके बारे में कई लोगों ने तो ये मानने से भी इनकार कर दिया था कि हमारी सेना ने इतनी बड़ी संख्या में चीनियों को मार गिराया होगा। ये युद्ध नवंबर १८,१९६२ को हुआ था। १३ कुमाऊँ रेजिमेंट के मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में १२३ सैनिकों ने बहादुरी के नए कीर्तिमान स्थापित किये। यहाँ अगर चीनी सफल हो जाते तो लद्दाख शेष भारत से कट जाता। मृत्यु की आँखों में झांकते हुए १३ कुमाऊँ रेजीमेंट की चार्ली प्लाटून के जिन १२३ जवानों ने हजारों फिट ऊपर, हाड़ कंपा देने वाली शीत में शौर्य की अद्भुत गाथा लिख दी, वह रोमांचित कर देने वाली है। असम्भव को केवल अदम्य साहस के बलबूते पर किस प्रकार सम्भव बनाया गया, यह उक्त मुठभेड़ में बचे मात्र ६ सैनिकों ने जब बताया तो करोड़ों शीश झुके बिना न रह सके।

समुद्र से १६००० फीट की ऊँचाई पर इस टुकड़ी के पास न तो कवर था और न सपोर्ट के लिए कोई और दस्ता। हड्डी गला देने वाली ठण्ड, शीत लहर और पत्थरों के बीच हमारे जवान उस

मेजर शैतान सिंह

परिस्थिति में लड़े, जिसके वे उस समय तक आदी नहीं थे। चीनी आक्रमणकारियों की संख्या ५ से ६ हजार के बीच थी। मेजर शैतान सिंह तो मानो प्रलय के अवतार बन गए थे। उन्हें सभी पलटनों में समन्वय बिठाते हुए अपना होश नहीं था। युद्ध में घायल निहाल सिंह ने जब इस अकल्पनीय शौर्य-गाथा का जिक्र किया तो सहसा किसी को विश्वास ही नहीं हुआ। पर यह सत्य था। विपरीत परिस्थितियाँ व अप्रत्याशित सुनिर्धारित आक्रमण को कैसे भारतीय जवान झेलते हैं इसकी दास्ताँ लद्दाख के रेजांग ला दर्रे पर लिख दी गयी।

अतः संख्या का विशेष महत्त्व नहीं, महत्त्व है साहस का। जिसे 'रेजांग ला' पर साबित किया गया।

आपरेशन मेघदूत भी ऐसा ही एक अभियान था जब भारतीय सेना द्वारा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया गया। अबकी बार दुश्मन पाकिस्तान था। वस्तुतः स्वतंत्रता के पश्चात् कश्मीर इलाके पर कबाइलियों ने हमला कर दिया था। महाराजा हरी सिंह जी ने देरी से ही सही जब भारत में विलय का निश्चय किया तो भारतीय सेना मोर्चे पर पहुँची और स्थिति को नियंत्रण में लिया।

भारत-पाकिस्तान की इस पहली लड़ाई पर १ जनवरी, १९४९ को दोनों देशों के बीच सीजफायर हो गया था। UN की मौजूदगी में २७ जुलाई १९४९ के दिन एक लकीर खींची गयी। सीजफायर लाइन। ये लकीर जिस पाइंट पर खत्म होती थी, उस पाइंट को NJ9842 का नाम दिया गया। इस पाइंट के उत्तर में काफी बड़ा हिस्सा ग्लेशियरों का था, जहाँ किसी भी देश का दावा नहीं था।

कालान्तर में पाकिस्तान ने सियाचिन पर धीरे-धीरे अपना अधिकार करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम पर्वतारोहियों को इन चोटियों पर चढ़ने हेतु अपनी ओर से परमिट देना शुरू किया फिर गाइड भेजना भी प्रारम्भ किया। माउंटेनियरिंग के नक्शों में इस हिस्से को पाकिस्तान का दिखाया जाने लगा, ताकि समय आने पर वह कह सके कि यह इलाका उसका है।

सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण इस इलाके को अपना कहने के पाकिस्तान के प्रयास का पता अचानक ही भारत को लगा।

अत्यन्त बर्फीले इलाकों जैसे कि सियाचिन में विशिष्ठ प्रकार के कपड़ों की आवश्यकता होती है। इन कपड़ों को आर्कटिक गेयर कहते हैं। लन्दन की एक कम्पनी इनको बनाती थी। भारतीय खुफिया एजेन्सी RAW ने जब अपनी आवश्यकताओं हेतु उक्त कम्पनी से सम्पर्क किया तो ज्ञात हुआ कि पाकिस्तान भी उसी कम्पनी से आर्कटिक गेयर खरीद रहा है। RAW से जब यह बात सम्बन्धित भारतीय अधिकारियों को पता चली तो हडकम्प मच गया कि पाकिस्तान ऐसे वस्त्र क्यों खरीद रहा है? निश्चित ही वह सियाचिन को लेकर कुछ गुप्त कार्यवाही में जुटा हुआ है।

एक और घटना घटी। भारत की तरफ से साल्टोरो रेंज पर {(जम्मू-कश्मीर में स्थित काराकोरम पर्वतमाला की एक उपश्रेणी है। यह काराकोरम के हृदय में सियाचिन हिमानी से दक्षिण पश्चिम में स्थित है)} ट्रेकिंग की इजाजत लेने के लिए पर्वतारोहियों की एक टीम कर्नल बुल्ल कुमार से मिली। कर्नल कुमार High Altitude Warfare School के कमांडिंग आफिसर थे। इन जर्मनों के पास जो नक्शा था, उसमें NJ9842 से काराकोरम पास तक का हिस्सा पाकिस्तान का बताया गया था। इसमें सियाचिन का हिस्सा भी शामिल था। यह अत्यन्त गम्भीर बात थी। एक योजना बनायी गयी। कर्नल नरेन्द्र बुल्ल कुमार के नेतृत्व में एक दल 'ला बिलाफोंड' पहुँचा, तो उनको कुछ जापानी लेबल वाले टिन के डिब्बे मिले। एक समय पाकिस्तानी हैलिकाप्टर की गश्त भी नजर आई। ग्राउण्ड पर कोई पाकिस्तानी हरकत नहीं दिखी। इसके पश्चात् इस इलाके में पेट्रोलिंग की फ्रीक्वेंसी बढ़ा दी गई। पेट्रोलिंग के दौरान भारतीय सेना को एक पर्चा दिखा। पाकिस्तान ने साफ-साफ कहा कि इण्डिया को उसके इलाके में दखल नहीं देना चाहिए। संकेत था कि सियाचिन ग्लेशियर को पाकिस्तान अपनी जमीन मान चुका है।

१९८२ में लेफ्टिनेंट जनरल छिब्बर नार्दर्न कमांड के जनरल आफिसर कमांडिंग बने। उसी दौरान उनके पास पाकिस्तान का एक प्रोटेस्ट नोट आया था। इण्डिया की तरफ से भी विरोध दर्ज कराया गया। लेकिन पाकिस्तान सियाचिन पर अपना दावा छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। १९८३ में इंटेलिजेंस रिपोर्ट आई कि पाकिस्तान सियाचिन में अपनी सेना भेजने की तैयारी कर

रहा है। उसने Burzil Forces के नाम से एक टुकड़ी तैयार की थी, जिसे सियाचिन पर कब्जे के लिए ट्रेनिंग दी जा रही थी। अब भारत के पास सिवाय इसके कोई रास्ता नहीं था कि पाकिस्तान से पूर्व ही सियाचिन को अपने अधिकार में ले लिया जाय। पर आवश्यकता थी सेना के लिए विशेष कपड़ों व साजो सामान की। जब यूरोप के एक सप्लायर से बात की तो ज्ञात हुआ कि वह तो पाकिस्तान को १५० की संख्या में देने वाला है अतः हम किसी दूसरी फर्म से सम्पर्क करें। यह हमारे लिए अलामिंग स्थिति थी। पाकिस्तान तैयार है यह अब स्पष्ट हो गया था। हमने भी आर्कटिक गेयर शीघ्रातिशीघ्र उपलब्ध करने के प्रयास तेज कर दिए। १३ अप्रैल को वैशाखी थी। पाकिस्तान सोच भी नहीं सकता था कि भारत अपना अभियान इस दिन प्रारम्भ करेगा। पर इन्तजार था विशेष साजोसामान का। १२ अप्रैल का दिन आ गया। अभी तक आर्कटिक गेयर नहीं आ पाए थे। निश्चय किया कि बिना विशेष कपड़ों के ही अभियान प्रारम्भ कर दिया जाय। जब भारतीय जवानों को सारी स्थिति स्पष्ट कर उनका मत पूछा गया तो माँ भारती का प्रत्येक लाल अपने देश के हित सम्पादन के लिए मचल पड़ा। साक्षात् मृत्यु से सामना करने भारतीय पौरुष तैयार था। संयोग देखिये कि तभी उक्त साजो सामान भी आ पहुँचा।

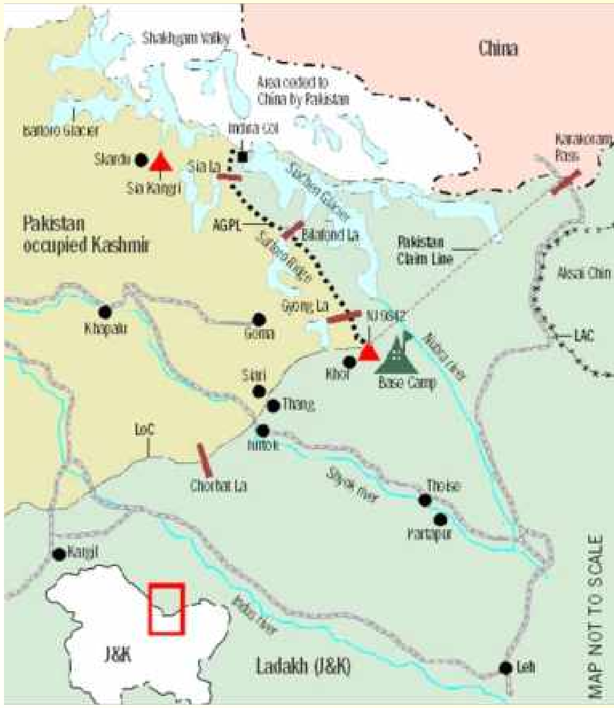

ब्रिगेडियर चन्ना की रणनीति थी कि दुश्मन को मौका देने से पहले कार्रवाई कर देनी चाहिए। अप्रैल के महीने में भारी बर्फबारी होती है। उस मौसम का सामना करना आम इंसानों के बस की बात नहीं है। आर्मी ने ऑपरेशन के लिए वही वक्त चुना।

पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने अपनी किताब 'इन दी लाइन ऑफ फायर' में लिखा, 'इण्डिया ने हमें हैरान कर दिया था। हमें इस कदम की कतई उम्मीद नहीं थी।'

चार टीमें सियाचिन को अपने कब्जे में लेने के मिशन के लिए तैयार थीं। इन्दिरा काल, सिया ला, बिलाफोंड ला और ग्योंग ला।

१३ अप्रैल, १९८४ की सुबह ३० जवानों ने 'बिलाफोंड ला' को आराम से कब्जे में ले लिया। उसके बाद बर्फबारी और तेज हो गई। दो दिनों के बाद मौसम साफ हुआ। १६ अप्रैल, १९८४ को 'सिया ला' भारत के कब्जे में था।

पाकिस्तान ने जून के महीने में 'ऑपरेशन अबाबील' लान्च किया था। दुनिया की सबसे ऊँची बैटलफील्ड में गोलियाँ और मोर्टार दागे गए। पाकिस्तान को बार-बार मुँह की खानी पड़ी। अगस्त आते-आते 'ग्योंग ला' पर इण्डियन आर्मी ने तिरंगा फहरा दिया था। अब पूरा सियाचिन कब्जे में था।

दुनिया के सबसे ऊँचे मैदान ए जंग में सीधे टकराव की यह एक तरह से पहली घटना थी। इसे ऑपरेशन मेघदूत नाम दिया गया और इसने भारत की सामरिक रणनीतिक जीत की नींव रखी।

सियाचिन की भौगोलिक बनावट ऐसी है कि भारत की तरफ से सियाचिन की खड़ी चढ़ाई है और इसीलिए ऑपरेशन मेघदूत को काफी मुश्किल माना गया था। जबकि पाकिस्तान की तरफ से ये ऊँचाई काफी कम है। उसके बावजूद भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों को मात दी। इसीलिए दुनियाभर की जो सफल लड़ाईयाँ हुईं हैं उनमें ऑपरेशन मेघदूत का नाम भी आता है। ये अपनी तरह का एक अलग ही युद्ध था जिसमें भारतीय सैनिकों ने माइनस ६० से माइनस ७० डिग्री के तापमान में सबसे ऊँची पहाड़ियों पर जाकर फतह हासिल की थी। पाकिस्तान के लिए ये हार काफी शर्मनाक थी।

भारतीय रणबांकुरों का यह अदम्य साहस कि जब बिना विशिष्ठ साजो सामान के दुनिया की कोई सेना युद्ध का साहस नहीं कर सकती भारतीय जवानों ने बिना इनके जाने का दृढ मन बना लिया था। यही अदम्य साहस हमें अजेय बनाता है यह बात चीन को तथा भारत के उन नेताओं को समझ लेनी चाहिए जो सदैव भारतीय सेना के पराक्रम पर सन्देह करते रहते हैं। १५ जून २०२० को गलवान घाटी में निहत्थे ही ५० चीनियों की गर्दनें तोड़कर भारतीय जवानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि 'जोश इज हाई' की परम्परा अभी भी जारी है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

५

(फरवरी–2024 तक प्रतिमाह एक लेख)

अब तक की घटनाओं से मूलशंकर के मन व मस्तिष्क में अनेक प्रश्न मचल रहे थे। उनके अन्दर पनप रहे वैराग्य के भाव माता-पिता से अदृश्य न रह सके। उन्होंने गृहस्थ के बन्धन में मूलजी को बाँध देना ही इसका उपाय समझा। जब मूलशंकर ने यह देखा तो 22 साल की अवस्था में विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सुशोभित अपने धनधान्यपूर्ण गृह को सारे ठाठ-बाट को, माता-पिता के प्यार और दुलार को तिलांजलि देकर, फिर लौटकर घर नहीं आऊँगा, यह निश्चय कर घर से निकल पड़े। यह बात संवत् 1903 (सन् 1846 की है)

भारत में मतान्तरण का इतिहास अगर खोजने चलें तो इस्लामी आक्रमण से पूर्व अपवादस्वरूप ही मतान्तरण की घटनाएँ मिलेंगी। जो भी आक्रमणकारी थे, चाहे वे शक हों, हूण हों, कुषाण हों भारतीय सांस्कृतिक धारा में ही समाहित हो गए तो भारतीयों के उनके मत ग्रहण करने की तो कथा ही क्या? ये सब लोग भारत आकर यहाँ के लोगों में हिल मिल गए। कोई नया धर्म, मत या समाज न बना सका। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू संगठन' में सही लिखा है -

'In the obscure ancient histories of Persia and other states of Greek origin we read of certain invasions of India by foreigners but they made no impression on the Indian population and if any foreigners were left by the invaders they were absorbed by various Aryan people and became part and parcel of the Indian nation in after times.

परन्तु मुहम्मद बिन कासिम ने जब सातवीं शताब्दी में भारत पर आक्रमण किया उसके पश्चात् बलात् विजित लोगों का मतान्तरण किया गया। मतान्तरण के साधनों के बारे में जाफर मक्की लिखता है- इस्लाम में धर्मांतरण के मुख्य साधन थे मृत्युभय, परिवार को गुलाम बनाए जाने का भय, आर्थिक लोभ (पारितोषिक, पेंशन, लूट का माल) धर्मान्तरित होने वाले के पैतृक धर्म में प्रचलित अंधविश्वास और अन्त में इस्लाम के प्रचारकों द्वारा किया गया प्रभावशाली प्रचार (जाफर मक्की द्वारा १६ दिसंबर १४२१ को लिखे गए एक पत्र से इण्डिया ऑफिस हस्तलेख संख्या १५४५)

अधिकांशतः तो हिन्दू पुरुषों की हत्या करके उनकी स्त्रियों से निकाह कर लिया गया। बहु विवाह इस्लाम में प्रतिबन्धित न होने के कारण इस दिशा में कोई अवरोध नहीं था। इनकी सन्तानों ने मुस्लिम होना ही था। बाकियों को बलात् मतान्तरित कराया गया। विचार कीजिए! सातवीं शताब्दी में कुछ सहस्र मुस्लिम भारत में आये। विजय के पश्चात् अधिकांश लौट गए फिर लगभग १४०० वर्षों में आज इनकी संख्या १७ करोड़ (जबकि करोड़ों मुस्लिम पाकिस्तान तथा बंगलादेश में चले गए) है तो यह निष्कर्ष निकालना अतार्किक न होगा कि आज के सभी मुसलतानों के पूर्वज कभी न कभी हिन्दू थे। अपनी उक्त पुस्तक में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १६११ की जनगणना एवं उस पर जनगणना अधिकारी की टिप्पणी के आधार पर लिखा है कि-

"It should be added that even in Northern India the Muhammadan population is by no means wholly of foreign origin. Of the 12 million followers of Islam in the Punjab, 10 millions showed by the caste entry (such as Rajputs, Jat, Arain, Gujar, Mochi, Turkhan, and Teh) that they were originally Hindus. The number who described themselves as belonging to foreign races such as Pathan, Biloch, Sheikh, Saiyad and Moghal was less than 2 millions, and some even of these have very little foreign blood in their veins."

(page 128)

स्पष्ट है कि इन हिन्दुओं ने विभिन्न कारणों से कभी न कभी इस्लाम स्वीकार कर लिया था। जब कभी इनके मन में वापस हिन्दू धर्म में वापिसी की इच्छा हुयी होगी तो हिन्दुओं द्वारा घर-वापिसी के सभी दरवाजे बन्द कर लिए जाने से यह सम्भव नहीं हो सका। वस्तुतः घर वापिसी के रास्ते बन्द कर देना हिन्दुओं की घटती संख्या का बहुत बड़ा कारण रहा। इस विषय में सही ही लिखा गया है-

'Gone once, gone for ever was the simple formula of Hinduism. And if Hinduism had no other weakness, this one weakness was more than enough to seal its doom and to annihilate it from the surface of the earth.

आज यद्यपि इस पर अविश्वास किया जा सकता है परन्तु सच तो यह है कि हिन्दुओं की इस प्रवृत्ति का लाभ ईसाइयों और मौलवियों ने खूब उठाया। एक कुएँ में कुछ अखाद्य वस्तु डालने के बाद जिस-जिस ने भी उस पानी को पीया होता था उसे मतान्तरित कर लिया जाता था। हिन्दू प्रवृत्ति उसे शुद्ध कर वापस अपनाने का विचार भी नहीं करती थी।

आज अन्य उपायों को मतान्तरण के लिए अपनाया जा रहा है, भय का माहौल बनाकर दबाब में धर्मांतरण का यह कार्य इन पंक्तियों के लिखे जाने तक भी बन्द नहीं हुआ है। हरियाणा तथा राजस्थान में फैले मेवात क्षेत्र से मतान्तरण की दिल दहला देने वाली घटनाएँ सामने आ रहीं हैं। जेहाद के अनेक नए प्रकार आविष्कृत कर लिए गए हैं जिनमें नवीनतम लव जेहाद तथा जमीन जेहाद हैं।

जहाँ तक ईसाइयत का प्रश्न है तो भारत में ये कान्वेंट स्कूलों, चर्चों, मिशन, अस्पतालों, अनाथालयों द्वारा अन्दर तक घुसपैठ कर चुका है! अंग्रेजी शिक्षा ईसाइयत की वाहक बन गयी। मैकाले की इस प्रभावी नीति पर अटल विश्वास प्रदर्शित करते हुए डॉक्टर डफ ने तो चर्चों की एक सभा के

समक्ष सन् १८३५ में स्पष्ट कहा था- 'जिस-जिस दिशा में पाश्चात्य शिक्षा प्रगति करेगी, उस-उस दिशा में हिन्दुत्व के अंग टूटते चले जायेंगे और अन्त में जाकर ऐसा होगा कि हिन्दुत्व का कोई भी अंग साबूत नहीं रहेगा।'

इस बात को केवल महर्षि दयानन्द ने समझा। इसीलिए पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को चुनौती स्वरूप गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना की गयी। इस वास्तविकता को स्वीकार करते हुए बंगाल के गवर्नर लार्ड रोनाल्डशे ने एक पुस्तक 'आर्यावर्त्त का हृदय' में लिखा- 'अंग्रेजियत की लहर का विरोध करने में स्वामी दयानन्द या उनकी शिक्षा का जितना हाथ था यह तो थोड़े से ही विचार से ज्ञात हो सकता है।'

अब अगर भारत में ईसाई मत के फैलाव की बात करें तो, यही बात ईसाई मत के साथ है। इंग्लैंड वा अन्य देशों से कितने ईसाई भारत आये थे? परन्तु वैचारिक श्रेष्ठता सिद्ध करने के कारण नहीं वरन् अवैध, अनैतिक उपायों का सहारा ले इन्होंने मतान्तरण का जो चक्र चलाया, जिसे ब्रिटिश राज्य में राज्य शक्ति का सहारा मिला, स्वतंत्रता के पश्चात् भी इनके रास्ते में कोई अवरोध नहीं आया।

कुछ लोग जब ईसाई मत तथा इस्लाम के प्रसार की तुलना करते हैं तो ईसाइयों को 'सॉफ्ट' मानते हैं तथा उसे हिंसा तथा क्रूरता से रहित मानते हैं। परन्तु तथ्य इस धारणा का समर्थन नहीं करते। विश्वभर में चर्च के अत्याचार प्रसिद्ध रहे हैं। आप क्रूसेड कहे जाने वाले युद्धों का इतिहास पढ़ें। वैचारिक विमर्श का ईसाई मत में भी कोई स्थान नहीं रहा। सत्य अन्वेषण करने वाले व्यक्तियों के साथ चर्च ने क्या किया यह किसे ज्ञात नहीं? गेलीलियो, कापरनिकस, ब्रूनो की गाथा तो सभी को ज्ञात है। एक महिला विदुषी को भी किस क्रूरता से मारा यही इनकी धर्मांधता का प्रमाण है।

हिपेशिया एक ऐसा नाम है जिसकी कहानी सुन कर आज अनेकों चर्चों में ननों के साथ हो रहे निर्मम व्यवहार भी फीके लगने लगेंगे। गणित, दर्शन सहित कई विषयों में विद्वान् रही हिपेशिया चौथी-पाँचवी सदी में पूर्वी रोमन साम्राज्य के मिस्र में एक जाना-पहचाना नाम था। उनके आधुनिक विचार और उनका ज्ञान ईसाईयत के स्वयंभू पंडितों को काटने दौड़ता था। फिर एक दिन ऐसा आया, जब ईसाई मजहबी क्रूरता अपनी सारी हदें पार कर गई। कुछ कट्टर ईसाइयों ने उसका अपहरण कर लिया। उसके बाद उसे अलेक्जेंड्रिया नगर के एक धार्मिक स्थल में ले जा कर वहाँ उन्होंने उसकी हत्या कर दी, ज्ञान का दीपक बुझा दिया। निर्ममता अपनी

सारी हदें तब पार कर गई जब उसके शरीर को इतने टुकड़ों में काटा गया कि शायद उनका कोई रिश्तेदार भी उन्हें पहचान नहीं पाया होगा। इस घटना को पढ़कर क्या इनको कोई शान्तिदूत कहेगा? भारत में गोवा में ईसाइयत के प्रसार

में अत्याचारों की कहानी स्पष्ट पढ़ी जा सकती है। सेंट फ्रांसिस जेवियर के कारनामे तथा हिन्दुओं पर किये गए अत्याचार रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। नागालैंड में आखिर जीरो प्रतिशत से ९९ प्रतिशत ईसाई कैसे बन गए? इतिहास कारण स्पष्ट करता है, चाहे हम आपने दायित्व के निर्वहन में उदासीन रहने के कारण उससे अनजान बने रहने का बहाना करते रहें।

उक्त प्रकार के मत-परिवर्तन विश्व भर में अशान्ति के कारक रहे हैं और आज भी हैं। भारत में भी अगर उक्त प्रकारों से किये जा रहे मतान्तरों पर रोक लगा दी जाय तो एक बहुत बड़ा संकट समाप्त हो जाय। वैचारिक विमर्श के उपरान्त श्रेष्ठता के आधार पर मत-चयन की स्वतंत्रता के अतिरिक्त मतान्तरण के सभी प्रकारों पर कानूनन रोक लगे, यह प्रश्न जब भी सामने आता है तो मुस्लिम और ईसाई जन ही क्यों विरोध करते हैं, क्या इस पर कभी आपने विचार किया है? यह चोर की दाढ़ी में तिनका जैसा नहीं है? क्योंकि वे जानते हैं कि तर्क के आधार पर जब स्वयं पैगम्बर मात्र ६०-७० व्यक्तियों को प्रभावित कर सके और स्वयं जीसस १२ शिष्य ही बना सके जिनमें कि एक ने उनसे घनघोर द्रोह भी किया तो फिर आज के ईसाई पादरियों व मौलवियों के पास वह कौन सी विद्या है जिसके आधार पर वे अपने मत का प्रचार कर सकें?

कुछ भी हो न्याय की बात तो यही है कि केवल बौद्धिक विमर्श ही मतान्तरण का आधार होना चाहिए। वर्तमान युग में यह बात केवल महर्षि दयानन्द ने न केवल कही वरन् उस पर आचरण भी किया। उन्होंने अपने जीवन में पौराणिक आचार्यों से, पादरियों से, मौलवियों से अनेकों शास्त्रार्थ किये। शास्त्रार्थ आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का अचूक व निर्दोष साधन बन गया। लेखन व उपदेश के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती हिन्दू आचार्यों को यह समझाने में एक हद तक सफल रहे कि जाति की रक्षा के लिए सबके लिए घर के रास्ते खोल देने चाहिए। उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के १३वें व १४वें समुल्लास में यह सिद्ध करने के लिए कि बायबिल व कुरआन ईश्वरकृत पुस्तक नहीं हो सकती हैं तथा इन पुस्तकों में जिन ईश्वरों का वर्णन किया है वह भी ईश्वर नहीं हो सकता है, ऐसे प्रबल प्रमाण उपस्थित किये जिनके उत्तर आज तक भी विपक्षी नहीं दे पाए हैं।

उदाहरण के तौर पर बायबिल की 'उत्पत्ति' पुस्तक पर ऋषि ने आपत्ति की कि ईश्वर ने जब सूर्य व चन्द्र को चौथे दिन बनाया तो दिन की गणना क्योंकर की गयी? आखिर तो सूर्योदय के पश्चात् ही तो दिन और सूर्यास्त के पश्चात् रात होती है। इस पर कोई एक उत्तर अभी तक नहीं आ पाया है। आप इण्टरनेट पर देख लें दस प्रकार के समाधान मिलेंगे। एक और उदाहरण देखिये। ईश्वर ने जब आदम की एक हड्डी से हव्वा का निर्माण किया तो पुरुषों के एक हड्डी कम होनी चाहिए। इस पर बड़ी बहस चली और तब बताया गया कि पुरुष जननांग से हड्डी लेकर नारी को बनाया गया अतः उसमें हड्डी नहीं होती। इसी प्रकार जब यह प्रश्न किया जाता है कि ईश्वर ने हाबील (Abel) की भेंट ही स्वीकार क्यों की कायन (Kain) की क्यों नहीं? तो भी हम देखते हैं कि इसका उत्तर आज तक नहीं मिला। यह सब यहाँ लिखने का हमारा अभिप्राय यही है कि तर्क के आधार पर किसी भी कीमत पर कुरआन तथा बायबिल की श्रेष्ठता स्थापित नहीं की जा सकती। इस आवश्यक कार्य को महर्षि दयानन्द ने उन दिनों में जिस प्रमाण पुरस्सर तरीके से किया, अन्य कोई महापुरुष सोच भी नहीं सकता था। इससे इन पुस्तकों को सर्वश्रेष्ठ और स्वयं ईश्वर द्वारा प्रणीत बताकर श्रेष्ठता की डींगें मारने वाले सकते में आ गए (कुछ पाश्चात्य विचारक अवश्य यह अनुभव करने लगे थे कि विज्ञान द्वारा प्रकाशित सत्य के प्रकाश में बाइबिल की मान्यताओं को समर्थित करना सम्भव नहीं रह गया है, हम केवल एक उदाहरण यहाँ दे रहे हैं- डॉ. बिशप का)

The first chapter of Genesis obviously can

not be harmonized with the scientific conclusions which naturally all English children now learn as a part of their education. Our modern outlook has created a background of thought against which we can not maintain the traditional belief in infallibility of scriptures.

(Dr. Bishop, Birmingham)

अतः सत्य हृदय से, सौहार्दपूर्ण वातावरण में बुद्धि व तर्क का आश्रय लेकर किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के पश्चात्, जब कोई किसी मतविशेष का ग्रहण करता है तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह पद्धति महर्षि दयानन्द की थी जिस पर कोई व्यक्ति आपत्ति नहीं उठा सकता। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में मत-मतान्तरों की समीक्षा की है। महर्षि वहाँ लिखते हैं कि- 'यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिये है। सब मतों के विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे, इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ-मूठ बुराई वा भलाई लगाने का प्रयोजन है, किन्तु जो२ भलाई है, वही भलाई और जो बुराई है, वही बुराई सबको विदित होवे। न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्याऽसत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो, वह न माने वा माने, किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता। और यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जान कर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करें-करावें।'

इस प्रकार सत्यासत्य के निर्णय का यही सर्वश्रेष्ठ प्रकार है तथा महर्षि दयानन्द व आर्य समाज ने इसी का अवलम्बन सदैव कर सफलता प्राप्त की।

ईसाइयत तथा इस्लाम की प्रगति में अवरोध हेतु महर्षि दयानन्द ने एक बुद्धिवादी प्रयत्न कर सार्थक उपाय किया और उनके बाद आर्यसमाज ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। यद्यपि हिन्दू जनमानस एकदम निष्क्रिय कभी नहीं रहा। इसकी भी अति संक्षिप्त चर्चा यहाँ कर लेते हैं। जाने माने लेखक डॉ. शंकर शरण ने एक लेख में शुद्धि के इन अल्प प्रयासों पर प्रकाश डाला है वहाँ से हम कुछ सामग्री यहाँ उद्धृत कर रहे हैं-

'जाने-माने अरब यात्री अल बिलादुरी ने जिक्र किया है कि सिन्ध में पहली मुस्लिम जीत के बाद बने मुसलमान जल्द ही पुनः हिन्दू धर्म में आ गए। सुलतान मुहम्मद तुगलक के काल में दक्षिण भारत में हरिहर और बुक्का के धर्मांतरित होने और स्वामी विद्यारण्य (१२६६-१३६१) की प्रेरणा से पुनः हिन्दू होकर विजयनगर साम्राज्य बनाने की कथा भी जानी-मानी है। जियाउद्दीन बरनी ने फिरोज शाह तुगलक के समय

एक ब्राह्मण को दण्डस्वरूप जिन्दा जलाए जाने का वर्णन भी किया है, जो मुसलमानों को हिन्दू धर्म के प्रति श्रद्धावान बनाया करता था। डॉ. गोडबोले ने इसे 'शुद्धि' के लिए प्रथम बलिदान का उदाहरण माना है।

सिकन्दर बुतशिकन के समय मुसलमान बने अनेक लोग पुनः हिन्दू धर्म में आ गए थे, इस का वर्णन तबकाते-अकबरी के लेखक ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद (१६वीं सदी) ने भी किया है। पंडित कंठ भट्ट या निर्मल कंठ ने व्यवस्थित रूप से शुद्धिकरण परिषद् आयोजित की थी, यह उल्लेख मिलता है। कश्मीर में १९वीं सदी में भी राजा सर रणवीर सिंह ने बाकायदा एक 'श्रीरणवीर कारित प्रायश्चित ग्रन्थ' का ही निर्माण करवाया था, जिसमें म्लेच्छ बने लोगों की शुद्धि-व्यवस्था पर अध्याय दिया गया है। १६वीं सदी में जोधपुर के राजा सूरजमल ने आक्रमणकारी पठानों द्वारा अपहृत १४० हिन्दू बालिकाओं को छुड़ाने में ही अपने प्राणों की आहुति दी थी। उसी सदी में जैसलमेर के महारावल लूणकरण ने एक विशाल यज्ञ करा कर विगत सदियों में जबरन धर्मांतरित हुए लोगों की शुद्धि करवायी। १७वीं सदी में ही कीरतपुर (होशियारपुर) के संन्यासी कल्याण भारती के फारस जाकर मुसलमान बन जाने, मगर अनुभव से पुनः इस्लाम त्यागकर हिन्दू बनने की घटना भी मिलती है। स्वदेश आगमन पर उसका भव्य स्वागत हुआ था। यह वर्णन दबिस्ताने मजाहिब के लेखक फानी (१६वीं सदी) ने दिया है। उस ने कई मुस्लिमों के वैष्णव बैरागी बनने

की जानकारी भी दी है। डॉ. गोडबोले के अनुसार मध्यकालीन भारत में शुद्धि आन्दोलन के सब से प्रमुख प्रणेता संतशिरोमणि स्वामी रामानन्द (१२६६-१४१०) को ही मानना चाहिए। उस समय दिल्ली में तुगलक वंश का राज था। स्वामी जी ने मुसलमान बने हजारों राजपूतों को अयोध्या में विलोम-मंत्र द्वारा समारोह पूर्वक हिन्दू बनाया।

मराठों ने १७वीं सदी में शुद्धिकरण की व्यवस्था ही खड़ी की थी। दबाव के कारण बने मुसलमान को शुद्ध कर स्वयं छत्रपति शिवाजी ने पुनः हिन्दू बनाने का कार्य किया था। हिन्दवी स्वराज्य में भ्रष्ट किए व्यक्तियों को शुद्ध करने की चार व्यवस्थाएँ दी गई हैं। यह कार्य करवाने के लिए 'पण्डितराव' उपाधि धारक अधिकारी भी नियुक्त किया गया था। शुद्ध हुए व्यक्ति को शुद्धिकरण का आधिकारिक प्रमाण-पत्र दिया जाता था और उस का पंजीकरण भी स्थानीय कोतवाली में होता था।

१६ वीं शताब्दी में जब मतान्तरण का एक दौर चल रहा था तथा हिन्दू लापरवाह था तब मतान्तरण के प्रवाह को रोकने में जो कार्य महर्षि दयानन्द और उनके शिष्यों ने किया वह अद्भुत है। वस्तुतः उन्होंने सर्वप्रथम इस बीमारी के फैलने का सही-सही निदान किया।

इसमें प्रथम अपनी उन कमजोरियों को पहचान कर, जिनसे समाज के कुछ घटकों में इतनी वेदना उत्पन्न होती थी कि उसका झुकाव अन्य मतों की ओर हो जाता था, उनका निवारण करना प्रमुख था। ऋषि दयानन्द ने पाया कि सबसे बड़ी कमजोरी थी छुआछूत। इस अमानवीयता के चलते विक्षुब्ध वर्ग को अपनी ओर लालायित करने में विधर्मी सफल हो रहे थे। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म की मध्य-काल जनित सभी दुर्बलताओं को दूर करने हेतु बिगुल बजा दिया तथा अस्पृश्यता के विरुद्ध तो जैसे सिंहनाद कर दिया। दलितों के उन्नयन के जो प्रयास आर्यसमाज ने किये हैं वे अतुल्य हैं। राष्ट्र कवि दिनकर अपनी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखते हैं- 'जिन बुराइयों के कारण हिन्दू धर्म का ह्रास हो रहा था तथा अन्य धर्मों के लोग जिन दुर्बलताओं का लाभ उठाके हिन्दुओं को ईसाई बना रहे थे, उन बुराइयों को स्वामीजी ने अवश्य दूर किया, जिससे हिन्दुओं के सामाजिक संगठन में वही दृढ़ता आ गयी जो इस्लाम में थी। स्वामी जी ने छुआछूत के विचार को अवैदिक बताया और उनके समाज ने सहस्रों अन्त्यजों को यज्ञोपवीत देकर उन्हें हिन्दुत्व के भीतर आदर का स्थान दिया। दिनकर लिखते हैं 'आर्य समाज हिन्दुत्व की खड्गधर बाँह साबित हुआ। वे आगे लिखते हैं- 'ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणों से हिन्दुत्व की रक्षा करने में जितनी मुसीबतें आर्यसमाज ने झेलीं हैं उतनी किसी और संस्था ने नहीं। सच पूछिये तो उतर भारत में हिन्दुओं को जगाकर उन्हें प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्यसमाज को ही है।

इस प्रकार यह तथ्य व सत्य है कि आधुनिक युग में संगठित रूप से शुद्धि आन्दोलन के बड़े प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती हुए। आगामी अंक में इस विषय में स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा किये कार्यों का संक्षिप्त विवरण देकर प्रस्तुत विषय का समापन करेंगे।

- अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतनलाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, श्री सुदर्शन कुमार कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर

जीवन-विकास के नायाब पहलू शिक्षा और स्वाध्याय

जीवन-भर विद्यार्थी बने रहें, ताकि ज्ञान-प्राप्ति के द्वार सदा खुले रहें।

मानवीय जीवन के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए कई महत्त्वपूर्ण आयाम हैं, जिनमें शिक्षा और स्वाध्याय अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। शिक्षा और स्वाध्याय-दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जीवन के प्रथम चरण में शिक्षा की अहमियत है, किन्तु उसके शेष भाग में स्वाध्याय की अपेक्षा है। ज्ञान तो जीवन का वह पहलू है, जिसका कभी अन्त नहीं है। जो किसी उपाधि-विशेष तक के लिए पढ़ाई करके अपने आपको पूर्ण शिक्षित मान लेता है, तो ज्ञान की दृष्टि से यह उसकी पराजय है। शिक्षित होने का अर्थ यह नहीं कि किताबों को पढ़ लेना या विद्यालयीय परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाना। शिक्षित होने का अर्थ यह है कि ज्ञान और विज्ञान के द्वारा अपने बौद्धिक और मानसिक विकास के साथ जीवन के बहुआयामी विकास के लिए समर्थ-सुदृढ़ हो जाना। शिक्षा और ज्ञान का क्षेत्र तो इतना व्यापक है कि व्यक्ति चाहे तो जीवन भर विद्यार्थी और शिष्य बना हुआ रह सकता है।

दुनिया में बहुप्रचलित धर्मों में से एक है-सिक्ख धर्म। शायद सरदारों के लिए 'सिक्ख' शब्द उनके धर्म और परंपरा का परिचायक है, किन्तु मैं सिक्ख धर्म अथवा सिक्ख कुल में पैदा न होने के बावजूद अपने आपको बड़े प्रेम से सिक्ख कहूँगा। सिक्ख शब्द शिष्य से ही बना है। तुम अपने आपको चाहे सिक्ख कहो या शिष्य, दोनों का अर्थ और भाव एक ही है। जो हर समय कुछ-न-कुछ सीखने को, नया जानने को, नया करने को उत्सुक और संप्रेरित रहता है, वही व्यक्ति शिष्य है और वही व्यक्ति सिक्ख।

जिज्ञासा-भाव न छूटे

कुछ-न-कुछ नया सीखने और जानने की ललक तो व्यक्ति में हर समय रहनी ही चाहिए। ऐसा नहीं कि एम.ए., बी.ए कर लिया, कहीं नौकरी लग गई और हमने शिक्षा और ज्ञान की इतिश्री मान ली। हम विद्यालयों-महाविद्यालयों में जो अध्ययन करते हैं, वह तो एक तयशुदा-आरोपित वस्तु है, किन्तु महाविद्यालयीय अध्ययन से मुक्त हो जाने के बाद विश्व का विराट क्षितिज खुला है। हम अपनी मौलिक दृष्टि और रुचि के अनुरूप ज्ञान-सामग्री की तलाश कर सकते हैं। विद्याभ्यास का यह पहला चरण शिक्षा के तहत आ जाएगा, किन्तु यह दूसरा चरण स्वाध्याय, चिंतन और अनुसंधान के अन्तर्गत।

मैं मानता हूँ कि शिक्षा जीवन का अनिवार्य चरण है, किन्तु शिक्षा और मनुष्य के सम्बन्ध पर जब विचार करते हैं तो यह जाहिर होता है कि शिक्षा वह होनी चाहिए, जो व्यक्ति के मौलिक और सहज विकास में सहायक हो। इतिहास की पुरानी किताबों में शिक्षा की सार्थकता के जो स्वरूप देखने को मिलते हैं, वे यह साफ जाहिर करते हैं कि तब शिक्षा का उद्देश्य रोजी-रोटी नहीं था, वरन् जीवन के आन्तरिक और व्यावहारिक स्वरूप को परिपक्व और संस्कारित बनाना था। तब लोगों के लिए शिक्षा जीने की कला थी। वे पढ़े हुए को जीवन में आचरित हुआ देखना पसंद करते थे। उनकी कथनी उनके ज्ञान से उद्‌भूत् होती थी। कथनी की अभिव्यक्ति से पहले इस बात के लिए सजग रहता था कि उसकी कथनी, उसकी करनी के विरुद्ध न हो। माना कि अपवाद तो तब भी होते थे, लेकिन आज की शिक्षा बहुत संकुचित हो चुकी है।

शिक्षक वर्ग अशिक्षित क्यों ?

आज हर विद्यार्थी का लक्ष्य पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करना, उपाधि हासिल करना और रोजी-रोटी के लिए उस उपाधि का उपयोग करना ही रह गया है। यही कारण है कि हमारे दैनिंदनीय जीवन से स्वाध्याय का विलोप हो गया है, हम किसी समाचार-पत्र अथवा मनोरंजन से जुड़ी पत्र-पत्रिका भले ही देख-पढ़ लेते हों, लेकिन इसके अलावा पठन-पाठन के प्रयास देखने को नहीं मिलते। व्यक्ति के ज्ञान में नित्य नूतनता और परिपक्वता का स्वरूप देखने को नहीं मिलता। हमने जो पढ़ाई की भी है, उसका भी न जाने क्या तरीका रहा कि आज यदि किसी डॉक्टरेट व्यक्ति से पूछा जाए कि तुमने अपनी आठवीं और दसवीं की पढ़ाई में कौन-कौन से पाठ पढ़े तो उसके लिए बताना मुश्किल हो जाएगा। शिक्षा का अर्थ कदापि नहीं है कि आगे पढ़ते जाओ और पिछला जो पढ़ा है, उसे भूल जाओ। उसे भूल जाना अपने आपके साथ छलावा है।

शिक्षा के साथ स्वाध्याय का सम्बन्ध न जोड़ पाने के कारण ही आज का आम शिक्षित वर्ग अशिक्षित-सा बना हुआ है। भला यह कौन नहीं जानता कि शराब या सिगरेट पीना, जर्दा-तम्बाकू खाना, व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए छिपा हुआ जहर है, लेकिन इसके बावजूद इन सबका धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। सरकार और शासन-प्रशासन भी विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकों में तो इनके निषेध का उल्लेख करते हैं, वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में इनके दुष्परिणामों का निष्कर्ष निकालते हैं, लेकिन सरकारों ने न जाने कौन-सी भाँग पी रखी है? करें भी तो क्या, इनकी आमद से ही उन सरकारों का खर्चा निकलता है, उनकी सरकारों का अस्तित्व टिका है।

माँ : पहली शिक्षिका

शिक्षा तो वह है जो हमें हमारी मिथ्या दृष्टि से मुक्त करे। जिससे जीवन की अन्तदृष्टि मिले वही शिक्षा आदमी के लिए वास्तविक रूप से कल्याणकारी है। शिक्षा जब तक जीवन की दीक्षा के रूप में न ढ़ले, तब तक वह अधूरी ही है। जहाँ शिक्षा का गुरुतर भार वहन करते हैं शिक्षक और प्रोफेसर, वहीं दीक्षा का संस्कार होता है उसके अपने घरवालों के द्वारा। घर के संस्कार शिक्षा को दीक्षा के रूप में ढ़ालते हैं। यह कार्य सही रूप में सम्पादित कर सकती है हमारी अपनी माँ। पिता तो रोजी-रोटी कमाने की व्यवस्था में व्यस्त हो जाते हैं, लेकिन माँ हर बच्चे को दीक्षित कर सकती है। वह सही अर्थों में जीवन की पहली शिक्षिका है।

अपना बच्चा कैसा बने, इसके लिए सबसे ज्यादा सजग माँ ही होती है। हर माँ अपने बच्चे को ऊँचा उठा हुआ देखना

चाहती है। इसके लिए वह बच्चे से भी श्रम कराती है। शिक्षा, शिक्षक और विद्यालय का भी उपयोग करती है। निश्चय ही जन्म देने वाले की महिमा इसी में है कि वह अपने जने हुए को संस्कारित और विकसित रूप प्रदान करे।

यह बात ठीक है कि आज की शिक्षा-शैली का स्वरूप बदल चुका है; बच्चों पर किताबों का इतना भार आ चुका है कि वह उनकी उम्र के अनुसार उनके लिए दबाव और तनाव का ही कारण बनता है। आजकल हम दो-ढ़ाई-तीन वर्ष की उम्र में ही बच्चे को स्कूल भेजना शुरू कर देते हैं। हमारे इस पुरुषार्थ से बच्चे में बहुत जल्दी ही स्कूल जाने की आदत पड़ जाती है, लेकिन इसका सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि बचपन में जो घरेलू संस्कार पड़ने चाहिए, उनका बीजारोपण नहीं हो पाता। बच्चा केवल किताबी ज्ञान में ही उलझ जाता है। न ही उसको नैसर्गिक गुणों के विकास का आधार मिल पाता है और न ही उदात्त गुणों के परिसंस्कार का वातावरण। शिक्षा वही, जो संस्कारित करे।

आज हमने शिक्षा को नये युग की नई रुढ़ि और नई फैशन बना डाला है। हम बच्चे को संस्कारशील विद्यालय में दाखिला दिलाने की बजाय होड़ाहोड़ में ऐसे विद्यालयों में भेजना पसन्द करते हैं जहाँ बच्चा न इधर का रहता है, न उधर का। शिक्षा तो स्वयं एक सेवा है। आज तो शिक्षा और चिकित्सालय विशुद्ध व्यावसायिक प्रतिष्ठान हो गये हैं। जो स्कूल जितना महंगा, उसका 'स्तर' उतना ही ऊँचा! अब ऐसी शिक्षा का हम क्या करें जिससे उठने-बैठने और खाने-पीने का भी विवेक न रहे। इस हाय-हैलो के जमाने में माता-पिता और बड़ों को प्रमाण करने में भी संकोच और शर्म महसूस होती है। भला जिसे अपने माता-पिता को धोक लगाने में भी शर्म आती है, वह उनके वक्त-बेवक्त में क्या तो काम आएगा और क्या सेवा करेगा! ऐसी शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का विकास तो जरूर होगा, लेकिन उसकी स्वार्थ-चेतना का ही।

आखिर व्यक्ति के अपने सौम्य स्वरूप का भी महत्व होता है।

सबके साथ मिलने-बैठने का, एक-दूसरे के सुख-दुःख में काम आने का, मर्यादा और शालीनता का अपना अर्थ और महत्व है, उसकी अपनी आवश्यकता है, उसका अपना परिणाम है। हम चाहे शिक्षा लें अथवा दें, शिक्षा का लक्ष्य पेट भरने तक सीमित न रहे। शिक्षा तो व्यक्तित्व-विकास का आधार है। शिक्षा को हमें नित्य-नवीन विकास के पहलुओं से जोड़ना चाहिए और ज्ञान के नित्य-नवीन पहलुओं का उपयोग करना चाहिए।

स्वीकारें, स्वाध्याय का संकल्प

हम स्वाध्याय अवश्य करें। हम केवल पठन और अध्ययन तक ही सीमित न रहें, वरन् ज्ञान के पैमाने को थोड़ा विस्तार दें। हम चिंतन-मनन और अनुसंधान भी करें। अपनी बुद्धि का मनन के लिए उपयोग न कर पाने के कारण ही ज्ञान और जीवन के बीच एक विरोधाभास अथवा एक साफ दूरी बनी हुई रहती है। मनन से ही जीवन में मनुस्मृति का जन्म होता

है। पठन के द्वारा किसी और का ज्ञान हमें मिलता है, लेकिन मनन तो वह मटका है, जिसमें उस ज्ञान का मंथन होता है, अनुशीलन और अनुसंधान होता है और तब जो सार-नवनीत निकलकर आता है, वह ज्ञान का परिपक्व परिणाम है। तब उस ज्ञान और जीवन के बीच एक संतुलन होगा, एक समरसता होगी; उस ज्ञान का जीवन-जगत् के लिए उपयोग होगा।

हम नियमित स्वाध्याय करें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अतीत में हमारी एज्यूकेशन कहाँ तक की रही। मेरे नाना पाठशाला की पढ़ाई की दृष्टि से तीसरी फेल थे, लेकिन हर कोई यह जानकर चमत्कृत हो उठेगा कि उन्होंने अपने जीवन में दस हजार से ज्यादा ऐतिहासिक और अनुसंधानपरक लेख लिखे। जीवन में अपनाया गया एक अकेला स्वाध्याय का संकल्प व्यक्ति को महान विद्वान् बना देता है।

मैं तो कहूँगा अधिक न सही, आप प्रतिदिन आधा घंटा स्वाध्याय करने का संकल्प ग्रहण करें। आप पाएँगे कि इस एक संकल्प की आपूर्ति की बदौलत आप एक महीने में कम-से-कम पाँच-सात विशिष्ट ग्रन्थों को पढ़ चुके हैं यानी एक वर्ष में आप पचासों ग्रन्थ और उनका ज्ञान अपनी बुद्धि को प्रदान कर चुके हैं। मात्र आधे घंटे नियमित स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति, मेरी गारण्टी है कि वह पाँच साल में पारंगत विद्वान् हो जाएगा। आप चाहें तो कुछ सरसता और समरसता के लिए एक से अधिक विषयों का भी उपयोग कर सकते हैं।

प्रमाद को बाधक न बनने दें

इसी सप्ताह मेरे पास एक ऐसे महानुभाव आए हैं जिन्होंने तत्व-ज्ञान का एक विश्वकोश, एनसाइक्लोपीडिया तैयार किया है। मैं उनके कार्य को देखकर अभिभूत हुआ। उन्होंने रहस्य उद्घाटित करते हुए कहा- यह विश्वकोश और कुछ नहीं, मेरे दस-बारह वर्ष के निरन्तर स्वाध्याय का सुमधुर परिणाम है। मैंने उन्हें साधुवाद दिया और एक बार पुनः स्वाध्याय का महत्व स्वीकार हुआ।

यदि आपको लिखने का शौक हो तो आप इसका भी उपयोग कर सकते हैं। जब आप प्रतिदिन रात को सोने से पहले दो पन्ने भी लिख देंगे तो निश्चय ही आप प्रति छः माह में एक

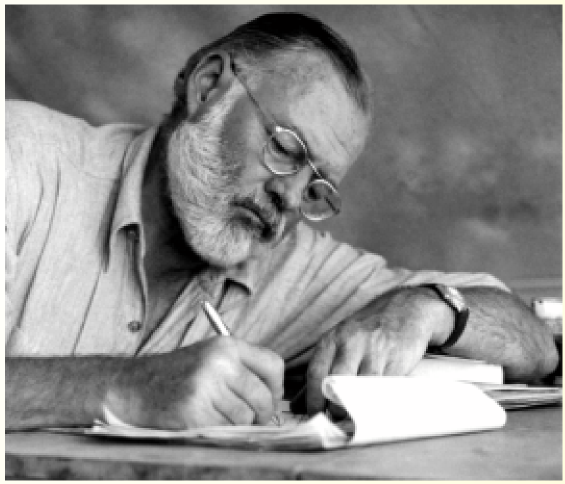

विशाल ग्रन्थ के लेखक बन सकते हैं। सहजयता प्रतिवर्ष आप ज्ञान के दो पुष्प इस धरती के कल्याण के लिए समर्पित कर सकते हैं। निश्चय ही आपका प्रमाद, आपके स्वाध्याय और ज्ञान का बाधक बन रहा है। आप अपने जीवन से प्रमाद को वैसे ही दूर हटा दें, जैसे जूतों के पुराने हो जाने पर उन्हें घर से बाहर फैंक दिया जाता है।

जीवन की हर सुबह ईश्वर की प्रार्थना करना, स्वयं के लिए सौभाग्यकारी है, पर इससे भी बड़ी हकीकत यह है कि स्वाध्याय करना उससे भी ज्यादा कल्याणकारी है। प्रार्थना से निपजा स्वाध्याय और स्वाध्याय से निष्पन्न प्रार्थना-दोनों का स्वाद, सुवास और प्रकाश अनोखा होता है। तब दोनों अलग नहीं होते, एक ही सिक्के के अभिन्न पहलू हो जाते हैं।

साभार- आचार्य चन्द्रप्रभ

हृदय को हृदय क्यों कहते हैं?

हृदय क्या है? यह क्या करता है? इसको हृदय क्यों कहते हैं? इस पर विचार-विमर्श करने से पूर्व हम हृदय शब्द की व्युत्पत्ति, निर्वचन और निर्माण प्रक्रिया पर विचार करते हैं। यह शब्द किस प्रकृति प्रत्यय से बना है और इसका अर्थ क्या है? हरण= ग्रहण अर्थवाले हृ (हृञ् हरणे)[1] धातु से औणादिक कयन् प्रयत्य के साथ ही दुक् आगम करने पर हृदय शब्द बनता है?

हरति आहरति स्वीकारोतीति हृदयम्। उणादिसूत्रपाठ पर व्याख्यान करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती हृदय शब्द की निरुक्ति इस प्रकार लिखते हैं-

'हरति विषयानिति हृदयम् मनो वा'[2]।।

हृदय यह एक संज्ञा (नाम) वाचक शब्द है। बड़े से बड़े अर्थ को कम से कम अर्थात् एक पद में अभिव्यक्त करने वाले शब्द को संज्ञा (नाम) कहते हैं। जिसके द्वारा अच्छी प्रकार से, भली-भाँति विस्तृत अर्थ को संक्षेप में समझा जाता है उस शब्द को संज्ञा कहते हैं। लघुता तथा सरलता से लोक व्यवहार संचालन के लिए संज्ञा अथवा नामकरण संस्कार किया जाता है। लघु को संज्ञा (नाम) और गुरु को संज्ञी (नामी=नामवाला) कहते हैं।

मानव ही क्या किसी भी प्राणी के शरीर में जहाँ आत्मा (जीवात्मा+परमात्मा यानि जीव और ईश्वर) रहता है, निवास करता है उस स्थान का नाम/संज्ञा हृदय है। हम सब प्राणियों के शरीर में हृदय नामक स्थान में हमारा जीव रहता है; इस सत्य तथ्य से साधारणजन भी परिचित हैं। इस विषय में शास्त्रीय प्रमाण भी उपलबध हैं। यथा-

अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः।
हृदा मनीषा मानसाभिक्लृप्तो य एतद् विदुरभृतास्ते भवन्ति[3]।।
अणोरणीयान्महतो महीयात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः[4]।।
अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः[5]।।

इन उपनिषत् प्रमाणों से अन्य गीता का प्रमाण भी है। वहाँ कहा गया है कि ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में रहता है?

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति[6]।।

वैदिक साहित्य में उपनिषत् नाम का एक ज्ञान सागर बहुत ही प्रसिद्ध है। उपनिषदों की संख्या शताधिक है। जो सामान्य पठन-पाठन में अथवा विश्वद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित हैं और जिन पर संस्कृत तथा हिन्दी भाष्य उपलब्ध हैं, उन सर्वमान्य उपनिषदों की संख्या एकादश (ग्यारह) है। इन उपनिषदों में छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक में हृदय शब्द की व्याख्या प्राप्त होती है। जहाँ हृदय को हृदय क्यों कहते हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है। छान्दोग्योपनिषत् का कथन है- वह यह आत्मा हृदय में है। हृदय को हृदय कहते भी इसलिए हैं (क्योंकि हृदि+अयम्= यह हृदय में है)। जो इस रहस्य को दिन प्रतिदिन जानता है वह उसे बाहर देखने की अपेक्षा अन्दर= हृदय के अन्दर ही देखता है, ढूँढ़ता है और वही मानो स्वर्ग को पा लेता है= प्राप्त कर लेता है-

'स वा एष आत्मा हृदि, तस्यैतदेव निरुक्तं हृद्ययमिति तस्माद् हृदयम्; अहरहर्वा एवंवित् स्वर्गं लोकमेति'[7]।।

यहाँ मूल वाक्य में यह अवश्य लिखा है कि **'तस्यैतदेव निरुक्तं हृदि+अयमिति'** पर हम जिस प्रश्न को लक्ष्य

बनाकर प्रवृत्त हुए हैं कि 'हृदय को हृदय क्यों कहते हैं' उसका उत्तर अभी समझ में नहीं आया। अस्तु। जब समाधान पाने के लिए चले हैं तो लक्ष्य प्राप्ति से पूर्व विराम कैसा और क्यों?

आइये अब बृहदारण्यकोपनिषत् को समझने का प्रयास करते हैं। बृहदारण्यक के ऋषि बहुत ही गंभीर और सरल प्रकार

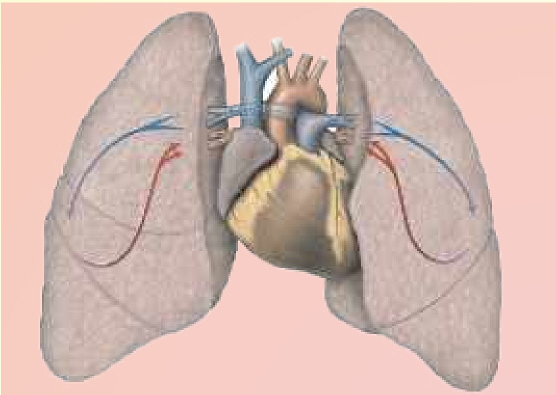

से, प्रभावी ढंग से समझा रहे हैं। उनका कहना है कि 'हृदय' यह तीन अक्षरों वाला एक संज्ञा शब्द है, नाम है। 'हृ' यह एक अक्षर है। हृञ् हरणे धातु से बना है। इसका अर्थ है हरण= अभिहरण= लाना। जो इस रहस्य को समझ लेता है कि प्रजापति ही हृदय है, हृदय ही ब्रह्म है, हृदय ही सब कुछ है। उसके सामने अपने और पराये सब लोग उपहार अभिहरणकर लाकर रखते हैं। 'द' यह दूसरा अक्षर है। 'दा दाने' धातु से बना है। इसका अर्थ है देना। जो यह समझ लेता है कि हृदय ही प्रजापति है, हृदय ही ब्रह्म है, हृदय ही सब कुछ है। उसके लिए सब लोग देते ही देते हैं। 'य' यह तीसरा अक्षर है। 'इण् गतौ' अथवा 'या गतौ प्रापणे च' धातु से बना है। इसका अर्थ है गति। गति अर्थात् जानना, जाना और प्राप्त करना। जो हृदय सम्बन्धी इस रहस्य को समझ लेता है वह स्वर्गलोक को जानकर उसे प्राप्त कर लेता है। **'एष प्रजापतिर्यद् हृदयमेततम् ब्रह्मैतत् सर्वं तदेतत् त्र्यक्षरं हृदयमितिः हृ इत्येकमक्षरम् अभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद। द इत्येकमक्षरम् ददत्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद। यमित्येकमक्षरमेति स्वर्गं लोकं य एवं वेद[८]।**

हृदय लेता है, देता है और गति करता है, उद्देश्य को, सफलता को प्राप्त करता है, यह बात समझ में आई इसलिए हृदय को हृदय कहते हैं। निरुक्त में भी हृदय शब्द का निर्वचन करते हुए इससे मिलता हुआ तथ्य लिखा है- 'हृदय को हृदय इसलिए कहते हैं क्योंकि वह तीन कार्य करता है। हृ से हरति, द से ददाति, य से याति। यह लेता है, देता है और चलता है अर्थात् उद्देश्य को, लक्ष्य को प्राप्त करता है। हृदय द्वारा आदान-प्रदान लेना-देना रक्त का होता है।

हृदय-शरीर के अशुद्ध रुधिर को लेकर फेफड़ों द्वारा शुद्ध कर शरीर को देता है और इसी उद्देश्य से सदा गतिमान रहता है और वह अपनी इस आदान-प्रदान और गति की प्रक्रिया से अपने उद्देश्य को अर्थात् शरीर को स्वस्थ एवं प्रसन्न तथा जीवित रखने में सफल होता है।

इस भाँति हमने जाना, समझा कि हृदय आदान-प्रदान एवं निरन्तर गति के कारण अपने उद्देश्य में सफल होता है इसलिए हृदय को हृदय कहते हैं।

अब हम यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि वैदिक वाङ्मय में किन-किन तत्वों को हृदय नाम (संज्ञा) से अभिहित किया गया है, कहा गया है? और साथ ही यह भी समझने का प्रयास करेंगे कि हृदय की परिभाषा, हृदय को हृदय कहने का कारण, जो हमने समझा है, क्या वे तत्व उस प्रक्रिया में सफल हैं?

इस विचार-विमर्श में पहला वाक्य है-

असौ वा आदित्यो हृदयम्[९]॥ परिभाषा के अनुसार आदान प्रदान और गति हृदय का कार्य है।

हम सब यह भलीभाँति जानते हैं कि आदित्य अर्थात् सूर्य, किरणों के द्वारा पृथिवी से, वसुधा से जल लेता है और मेघ-बादलों के द्वारा हजार गुणा करके दे देता है। सूर्य की गति को भी उत्तरायण और दक्षिणायन के नाम से सब जानते ही हैं; जिसके कारण अहोरात्र (दिन-रात) मास-वर्ष का निर्माण होता है अर्थात् महीने और वर्ष बनते हैं। यह आदित्य-सूर्य के विषय में सर्वसाधारण ज्ञात तथ्य है। अब हम कुछ शास्त्रीय प्रमाण उद्धृत कर रहे हैं। निरुक्त का कथन है कि आदित्य अपनी किरणों से जल को स्वीकरता है और फिर वर्षा कर गिराता अर्थात् देता है।

गूहते बुसम्। बुसमित्युदक नाम। गूहते संवृणोति। यद् वर्षन् पातयत्युदकं रश्मिभिस्तत् प्रत्यादत्ते[१०]।

कविकुल गुरु महाकवि कालिदास रघुवंश महाकाव्य के प्रारम्भ में कहते हैं कि रवि- आदित्य हजार गुणा बनाकर लौटाने के लिए ही रस-जल को लेता है-

सहस्रगुणमुत्स्रष्टुं हि रसमादत्ते रविः[११]॥

इस तरह आदित्य परिभाषा के अनुरूप आदान प्रदान और गति की क्रिया में अपने उद्देश्य में सफल है इसीलिए ब्राह्मण ग्रन्थ आदित्य को हृदय कह रहे हैं।

प्राणो वै हृदयमतो ह्ययमूर्ध्वः प्राणः संचरति[१२]॥

इस वाक्य में प्राण को हृदय कहा है। आहरण, वितरण और

गति, इस लक्षण के आधार पर हृदय को हृदय कहा गया है। प्राण की प्रक्रिया से भी सभी परिचित हैं। यह निन्तर चलता रहता है। यह भी कहा जा सकता है कि इसी कारण हृदय निरन्तर गतिशील रहता है। प्राण सभी प्राणियों को जीवनदायी वायु देता है और जीवन के लिए हानिकारक वायु को अपान के द्वारा बाहर निकालता है। मानव शरीर को प्राण वायु (ऑक्सीजन) प्राण के द्वारा प्राप्त होती है और कार्बन= हानिकारक वायु भी प्राण से बाहर होती है। यह इसका आहरण-वितरण का कार्य है। प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान ये पाँच प्राण के नाम से तथा नाग कूर्म, कृकल,

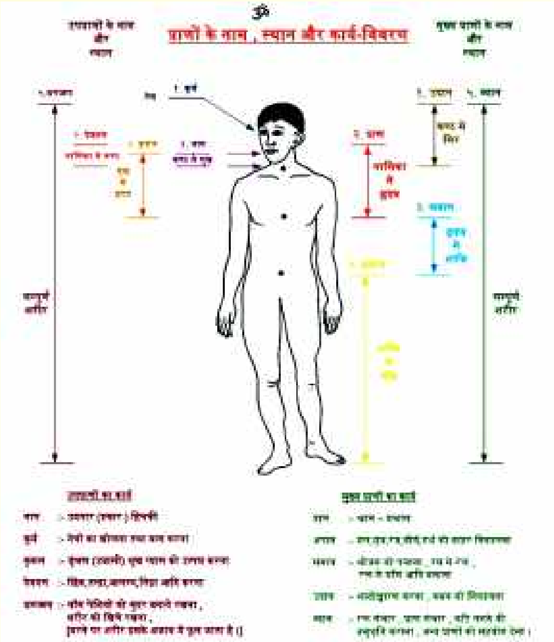

देवदत्त और धनन्जय ये पाँच उपप्राण के नाम से हमारे शरीर में आदान-प्रदान, समान-वितरण आदि का कार्य करते हैं। इस कारण शरीर निरोग रहता है, इनमें से किसी एक के कार्य में बाधा आने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है। जहाँ तक प्राण की गति का प्रश्न है, प्राण अहर्निश चलता ही रहता है यहाँ तक कि शयनावस्था में शरीर व सभी इन्द्रियाँ के सोने पर भी प्राण अपने कार्य में निरन्तर लगा रहता है यह कभी सोता नहीं, कभी थकता नहीं। ऊपर की ओर अथवा नीचे की ओर किसी भी दिशा में गति करता हुआ प्राण केन्द्र में रहता है। शरीर का केन्द्र नाभि होने से नाभि ही प्राणों को धारण करती है-

नाभिर्वैप्राणान् दाधार ये चोर्ध्वा ये चार्वांचः [13]।

नाभि के साथ हृदय को भी शरीर का केन्द्र या नाभि कहा जाता है। अतः नाभि प्राणों को धारण करती है पर प्राण हृदय में आश्रित रहते हैं- **प्राणो हृदयेश्रितः [14]।** इन सभी कारणों से वैदिक वाङ्मय में प्राण को हृदय कहा गया है।

आत्मा हृदयम् [15]।आत्मा वै मनोहृदयम् [16]। इन वाक्यों में आत्मा तथा मन को हृदय कहा है। आत्मा हृदय में रहता है यह तथ्य हम प्रारम्भ में ही उपनिषद् वाक्यों से स्पष्ट कर चुके हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण का भी कथन है कि आत्मा हृदय में रहता है- **आत्मा हृदयेश्रितः [17]।** मन का निवास भी ब्राह्मण ग्रन्थ हृदय में मानते हैं- **मनो हृदयेश्रितम् [18]।** मन इन्द्रियों से विषय को ग्रहण करता है तथा बुद्धि और आत्मा को देता है इसलिए मन को हृदय कहा है। ऐतरेयारण्यक हृदय और मन को एक मानते हुए कहता है कि ये सब प्रज्ञान के नाम हैं।

यदेतत् हृदयं मनश्चैतत् संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं मेधा दृष्टिर्धृतिर्भूतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः संकल्पः क्रतुरसुः कामो वश इति सर्वाण्येतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति [19]।

आत्मा शरीर धारण= ग्रहण करता है और शरीर को छोड़ता है शरीर के माध्यम से अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है- **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।** इसलिए आत्मा को हृदय कहा है।

इसके अतिरिक्त बाह्य पदार्थों में वैदिक साहित्य पुत्र को भी हृदय कहता है- **पुत्रो हि हृदयम् [20]।** आदान-प्रदान लक्षण के अनुसार पुत्र, माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी से संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, परम्परा और भौतिक सम्पदा को ग्रहण करता है तथा स्वयं पिता बनकर अपनी सन्तति को वितरित कर देता है और इस प्रक्रिया में आजीवन चलता ही रहता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि में जातकर्म संस्कार में, सन्तान को आशीर्वाद देते हुए, 'पिता यहाँ इन मंत्रों को पढ़े/बोले' कहकर तीन मंत्र लिखते हैं। उनमें से मध्यम मंत्र यहाँ उद्धृत कर रहे हैं।

'अंगादंगात् सम्भवसि हृदयादधि जायसे।
वेदो वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम् [21]।

इस मंत्र से भी पुत्र के हृदय होने की बात स्पष्ट है क्योंकि इसमें पुत्र को हृदय से उत्पन्न हुआ है, यह कहा है। इस भाँति इन सबको हृदय के लक्षण के अनुसार वैदिक वाङ्मय में हृदय कहा है। आदान-प्रदान और गति के कारण 'हृदय को हृदय' कहा है।

संदर्भ

१. धातुपाठ १, ६४०, उणादिसूत्रपाठः ४।१०१
२. उणादिसूत्रपाठः ४।१०१ पर दयानन्द वृत्तिः।
३. श्वेताश्वतरोपनिषद् ३।१३
४. कठोपनिषद् २।२०, तुलनीय- श्वेताश्वेतरोपनिषद् ३।२०
५. कठोपनिषद् ६।१७

६. भगवद्गीता १८।६१
७. छान्दोग्योपनिषद् ८।३।३, छान्दोग्यब्राह्मण २, ८, ३, ३
८. बृह.उप. ५।३।१, मा.श.ब्रा.१४।८।४।१, का.श.ब्रा.१७।५।३।१
६. मा.श.ब्रा.६।१।२।४०, का.श.ब्रा. ११।३।३।३१
१०. निरुक्त ५।३।७
११. रघुवंशमहाकाव्यम् १।२५
१२. मा.श.ब्रा.३।८।३।१५
१३. काठक संहिता ३७।१६
१४. तै. ब्रा. ३।१०।८।५, तुलनीय- शांखायनारण्यक ११।६
१५. तै. ब्रा. ३।१०।८।१०, मै. सं. ३।१०।२
१६. मा.श.ब्रा.३।८।३।८
१७. तै.ब्रा.३।१०।८।६
१८. तै.ब्रा.३।१०।८।६
१६. ऐतरेयारण्यक २।६।१
२०. तै.ब्रा.२।२।७।४
२१. संस्कार.; जातकर्म संस्कार। तु.- बृह. उप. ६।४।६

डॉ. रामनारायण शास्त्री, (सह आचार्य) संस्कृत विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सिरोही- ३०७००१ (राजस्थान)

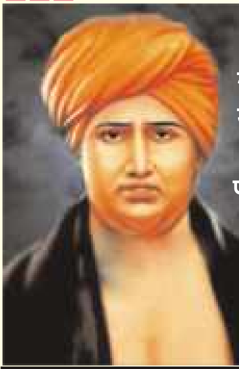

कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी।अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें ''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

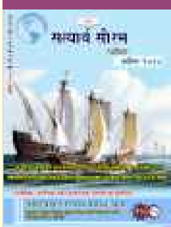

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

इस अंक में सत्यार्थप्रकाश पहेली नहीं दी जा रही है।

विभाजन की त्रासदी

पाकिस्तान बनाना मूर्खता थी

भारत विभाजन १९४७ में हो गया। एक शरीर और आत्मा के दो टुकड़े हो गए। एक हिस्सा पाकिस्तान बन गया और दूसरा हिस्सा पहले की तरह हिन्दुस्तान या भारत बनकर रह गया। लाखों हिन्दुओं को अपना प्यारा वतन, सम्पत्ति, बचपन की यादें छोड़कर नई अनजान मंजिल की तरफ भारतवर्ष में आना पड़ा और इसी तरह बहुत सारे मुसलमानों को भारत छोड़कर पाकिस्तान जाना पड़ा। इधर से उधर और उधर से इधर आने जाने वालों को खून खराबा, आगजनी, मारधाड़ का सामना करना पड़ा। भारत से प्रेम करने वाले कुछ मुसलमान लोग इसी देश में ही बस कर रह गए। जो हिन्दू, सिख तथा अल्पसंख्यक लोग जब भारत आ रहे थे तो उनमें बहुत सारों को मौत के घाट उतार दिया गया, धन-सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया, बीवियों और बेटियों को जबरन मुसलमान पुरुषों के साथ निकाह करना पड़ा, जो हिन्दू तथा सिख लोग धर्म परिवतन करके पाकिस्तान में रहने के लिए राजी हो गए उनको बख्श दिया गया।

१९४७ में भारत विभाजन के बाद जो पाकिस्तान बना वह एकाएक नहीं बना। उसकी नींव तो मुस्लिम लीग की स्थापना के बाद ही शुरू हो गई थी। अंग्रेजों को फूट डालो, राज्य करो...... की नीति बहुत रास आ गई थी क्योंकि भारत की आजादी का आन्दोलन भी चल रहा था इसलिए अंग्रेज लोग चाहते थे कि अगर मुसलमान लोग पाकिस्तान की मांग करेंगे तो हिन्दुओं और मुसलमानों में कभी भी एकता नहीं हो सकेगी और वे शासन करते रहेंगे। लेकिन उनका यह अनुमान गलत था। भारत की आजादी के लिए हिन्दुस्तान के हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यहूदी आदि सभी प्रकार के लोग बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने लगे। कहना नहीं होगा कि पाकिस्तान की मांग करने में मुस्लिम लीग से सम्बन्धित जिन्ना सबसे आगे रहे। १९४७ में जब भारत आजाद हुआ तो पाकिस्तान को एक अलग देश बनाए जाने की मांग पर अड़ गए। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू तथा कुछ अन्य कांग्रेसी नेताओं ने जिन्ना को अपनी इस मांग को त्यागने का आग्रह किया लेकिन आखिरकार पाकिस्तान बन ही गया। कुछ गैर मुस्लिम लोग जैसे हिन्दू, सिख, ईसाई आदि पाकिस्तान में ही रह गए। पाकिस्तान को एक इस्लामी देश घोषित कर दिया गया लेकिन जिन्ना ने यह आश्वासन दिया कि पाकिस्तान में गैर मुस्लिम लोगों के हितों तथा जानमाल की सुरक्षा की हम गारन्टी देते हैं। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

१९४७ में भारत विभाजन के समय हिन्दुओं, सिखों तथा अन्य अल्पसंख्यक लोगों की संख्या २२ फीसदी थी, लेकिन पाकिस्तान में गैर मुस्लिमों के साथ दुर्व्यवहार, यातना, उत्पीड़न, शोषण, जबरदस्ती धर्म परिवर्तन, हिन्दू लड़कियों को अगवा करके मुसलमान लड़कों के साथ उनके निकाह कराने के फलस्वरूप, उनके धार्मिक स्थानों को व्यापार

गोदाम, दूकानें आदि बनाने तथा उन्हें नष्ट करने के फलस्वरूप लाखों गैर मुस्लिम लोग पाकिस्तान से भारत में पलायन कर गए हैं। आश्वासन के बावजूद भी पाकिस्तान की एक के बाद एक इस्लामी सरकार हिन्दुओं और सिखों आदि अल्पसंख्यकों की रक्षा करने में नाकाम रही हैं। एक चातुर्य पूर्ण कदम के तहत पाकिस्तान सरकार ने वहाँ स्थित करतारपुर गुरुद्वारा साहब के लिए सिख श्रद्धालुओं के दर्शन करने लिए कोरिडोर की सुविधा दी लेकिन उसके कुछ दिनों बाद ही सिखों के प्रथम गुरु तथा सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानकदेव जी के जन्म स्थान ननकाना साहिब गुरुद्वारा मुसलमान लोगों के द्वारा हुड़दंग किए जाने, इसका नाम बदलने की धमकी देने तथा इसे नुकसान पहुँचाने की बात जब जगजाहिर हुई तो बात साफ हो गई कि पाकिस्तान में चाहे कोई भी प्रधानमंत्री बने, हिन्दुओं, सिखों तथा अन्य अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा नहीं की जा सकती। यही कारण है कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश जैसे इस्लामी देशों में हिन्दुओं, सिखों, ईसाइयों, बौद्धों आदि अल्पसंख्यक लोगों के ऊपर अनगिनत जुल्म किए जाते हैं, उन्हें अपने इष्ट देव की आराधना करने की, काम धन्धा करने की, पढ़ाई की तथा अपने बच्चों को अपनी मर्जी के मुताबिक विवाह शादी कराने की कोई आजादी नहीं। उनकी लड़कियों को अगवा करके मुसलमान बना दिया जाता है, पुराने समय की तरह उनके साथ जानवरों की तरह व्यवहार किया जाता है।

अगर इन सब बातों को ध्यान रखते हुए भारत सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून पास किया है जिसमें हिन्दुओं समेत छह प्रकार के गैर मुस्लिम समुदाय के लोगों को उपर्युक्त ३ इस्लामी देशों में जहाँ पर कि ये अल्पसंख्यक हैं, उत्पीड़न, शोषण, धर्मपरिवर्तन, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार उनकी स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगाने की बात होती है तो सरकार ने इन्हें भारतीय नागरिकता दिए जाने के जो द्वार खोल दिए हैं उसमें किसी को क्या एतराज हो सकता है? इस कानून के विरोधियों को सरकार ने साफ-साफ कह दिया है कि भारत में रहने वाले किसी भी मुसलमान को देश से बाहर नहीं निकाला जायेगा। इस कानून का मन्तव्य तो केवल अपने देश में गैर कानूनी घुसपैठ रोकने का है और उपर्युक्त ३ देशों में छह प्रकार के अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करके उन्हें भारतीय नागरिक बनाने तक है। फिर बात समझ से परे है कि इस कानून को लेकर कुछ मुस्लिम संगठनों सहित विपक्षी दल क्यों इस कानून का विरोध कर रहे हैं और जगह जगह विरोध प्रदर्शन, आगजनी या तोड़फोड़ कर रहे हैं। दिल्ली में शाहीन बाग क्षेत्र में लगभग ४० दिनों तक इस कानून के विरोध में धरना जारी रहा, जिससे आवागमन बाधित होने के कारण लाखों लोगों को दिक्कत हुयी। विपक्षी दल, जो कि मोदी सरकार को परेशान करने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहते, सरकार विरोधी इन प्रदर्शनों में आग में घी डालने का काम कर रहे थे । इन सब बातों से जहाँ देश के मुसलमानों तथा गैर मुसलमानों में आपसी भेदभाव तथा मानसिक संकीर्णता बढ़ती है वहाँ भारत देश की विदेशों में छवि भी खराब होती है। पूछा जा सकता है कि देश का हित चाहने वाले सभी लोग मिल बैठकर इस समस्या का समाधान क्यों नहीं ढूंढ़ते। पार्लियामेन्ट में उपर्युक्त कानून सर्वसम्मति से पास हो गया था, कानून की पालना करना सभी का कर्तव्य है। देश के माहौल को बिगाड़कर किसी को कुछ नहीं मिलेगा, सभी

नुकसान में रहेंगे। कुछ मुस्लिम नेता भारत में रहकर ही संविधान की आड़ में और हाथ में तिरंगा लेकर भारत विरोधी नारे लगा रहे थे, भाषण दे रहे थे। जब हम एक पाकिस्तान बनाकर आज तक सुख की सांस नहीं ले सके, इस देश के द्वारा हमारे लिए बहुत सारी समस्याएँ पैदा करने के कारण हम बहुत दुःखी हैं, क्या हम भारत के टुकड़े-टुकड़े करके इसके और कई पाकिस्तान बनाने की अनुमति दे देंगे?

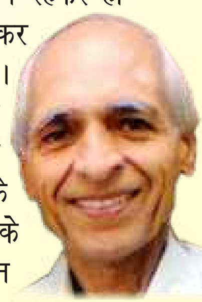

- प्रो.शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५-बी/२०
ग्रीन रोड़, रोहतक- १२४००१ (हरि.)

आन-बान की प्रतीक रानी सारंधा

कथा सरित

जिस समय में केवल भौतिक सुख-सुविधाओं का महत्त्व ही शेष रह गया है, इसे प्राप्त करने हेतु कोई कुछ भी करने को तत्पर रहता है चाहे इसके लिए अपने स्वाभिमान को गिरवी ही क्यों न रख दिया हो, उनके लिए रानी सारंधा जैसे चरित्र आश्चर्य के विषय ही हैं। सारंधा में बाल्यकाल से ही स्वाभिमान, साहस व क्षत्रियत्व के गुण कूट-कूट कर भरे थे। महान् उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद ने सारंधा के जीवन को चित्रित करते हुए उनको विशिष्ट गौरवांजलि प्रदान की है।

एक विशिष्ट घटना सारंधा के जीवन चरित्र के केन्द्र में सदा रही। एक युद्ध में उसका भाई अनिरुद्ध जब रात्रि में प्राणों के व्यामोह में घर भाग कर आ गया तो सारंधा ने उसके क्षत्रियत्व तथा स्वाभिमान को ललकारा। अनिरुद्ध उलटे पाँव वापस युद्ध लौट गया और अंततोगत्वा वह युद्ध जीत गया। परन्तु पति के उलटे पाँव वापिस लौट जाने से अनिरुद्ध की पत्नी शीतला अत्यधिक क्रोधित हुयी और उसने सारंधा को ताना मारा कि अगर स्वयं का पति होता तो आँचल में छिपा लेती। सारंधा ने तमक कर जबाब दिया कि मेरा पति होता तो स्वयं उसके सीने में कटार घोंप देती। तब उसे क्या पता था कि भविष्य के सीने में क्या छिपा है?

समय बीतता गया। सारंधा बड़ी हुयीं। उनका विवाह ओरछा के वीर नरेश चम्पतराय के साथ हुआ। चम्पतराय भी वीर एवं स्वाभिमानी थे। सब कुछ अच्छा चल रहा था। परन्तु घटनाक्रम कुछ ऐसा परिवर्तित हुआ कि राजा चम्पतराय को मुगल बादशाह के दरबार में जाना पड़ा। यद्यपि शाहजहाँ ने चम्पतराय को अतिरिक्त सुख-सुविधा प्रदान कर रखीं थीं और उनकी अन्य पत्नियाँ प्रसन्न भी थीं परन्तु सारंधा के लिए यह सब अपमान का कड़वा घूँट था क्योंकि हर सुख में उन्हें पराधीनता प्रत्यक्ष दिखती थी। गुलाब का फूल मानो कुम्हला गया। राजा अपनी पत्नी की मनोदशा समझते थे अतः येन-केन-प्रकारेण इस पराधीनता से छुटकारा पा सब ओरछा आ गए। अब रानी प्रसन्न थी। स्वाधीनता कि सूखी रोटी भी उनके लिए छप्पन भोग से कम नहीं थी।

शाहजहाँ के अंतिम समय में शहजादों में सिंहासन के लिए युद्ध छिड़ गया। यद्यपि चम्पतराय जी की मित्रता दाराशिकोह के साथ थी परन्तु अत्यधिक बाढ़ के कारण फंसे शहजादे मुराद तथा मुहीउद्दीन ने ओरछा से सहायता माँगी। अब धर्मसंकट आन उपस्थित हुआ। एक ओर मित्रता थी तो दूसरी ओर शरण-याचना। सारंधा से विचार कर चम्पतराय जी ने मुराद की सहायता की। नतीजा यह हुआ इस युद्ध में औरंगजेब को विजय प्राप्त हुयी। इस युद्ध में स्वयं रानी सारंधा ने भाग लिया और युद्ध का रुख ही पलट दिया। इस विजय में उनकी विशिष्ट भूमिका रही।

प्रसन्न होकर कृतज्ञ औरंगजेब ने एक बहुत बड़ी जागीर चम्पतराय जी को दे दी। परन्तु जागीर के सुख सारंधा के पैरों में बेड़ियाँ न डाल सके। इसी समय एक घटना घटी जिसने सारंधा और औरंगजेब के बीच कटुता बढ़ा दी। सरदार वली बहादुर के पास एक अद्‍भुत घोड़ा था जो सारंधा ने जीत लिया था। छत्रसाल एक दिन उस घोड़े पर सैर कर रहे थे कि मौका पा सरदार ने वह घोड़ा छत्रसाल से छीन लिया। सारंधा यह सुनकर आग-बबूला हो गयीं और औरंगजेब के भरे दरबार में जा पहुँचीं। उनका रौद्र रूप देख औरंगजेब ने शान्ति का प्रस्ताव दिया पर रानी भरे दरबार में वली बहादुर को परास्त कर घोड़ा वापस ले आयीं। यह अपमान औरंगजेब सह न सका। उसने ओरछा को समस्त जागीर से बेदखल कर दिया।

रानी ने प्रस्ताव दिया कि वह राजा सहित ओरछा से दूर चली जायेगी बशर्ते बादशाह ओरछा की जनता को कुछ न कहे। औरंगजेब के अत्याचारों से ओरछा की प्रजा को बचाने के लिए सारंधा ने अपने हृदय पर पत्थर रख एक ऐसी संधि के लिए हाँ कर ली जिसके बारे में कोई माँ-सोच भी नहीं सकती थी। उन्होंने अपने पुत्र छत्रसाल को औरंगजेब के दरबार में भेजना

मंजूर कर लिया। रानी को अत्यन्त दुःख था पर प्रजावत्सलता तो उनके हृदय में स्थापित थी।

राजा चम्पतराय तथा सारंधा कई वर्षों तक महाराणा प्रताप की तरह जंगलों में नाना प्रकार के कष्ट सहन कर भटकते रहे पर दिल्ली दरबार की ओर मुँह भी नहीं किया। औरंगजेब ने उन्हें पकड़ने के कई प्रयास किये पर वह सफल न हो सका। कई वर्ष बीत जाने पर वे ओरछा लौट आये। जब औरंगजेब को यह पता चला तो उसने ओरछा पर चढ़ाई कर दी।

ओरछा बचाने के तीन माह के प्रयत्न के पश्चात् राजा और रानी सारंधा रात के अंधेरे में पुनः ओरछा छोड़ कर निकल गए। राजा गंभीर रूप से बीमार थे। शत्रु उनका पीछा कर रहा था। राजा के अत्यन्त अनुनय करने पर सारंधा रानी ने इस विचार से कि राजा शत्रुओं के हाथ जीवित पड़ अपमान से बच जायं, राजा के सीने में कटार घोंप दी। भाई अनिरुद्ध वाली घटना के समय सारन्धा ने जो कहा वह सच हो गया। उसने अपमान से बचने के लिए स्वयं अपने पति के सीने में कटार घोंप दी। शत्रु यह देख हक्का-बक्का रह गए। वे सारंधा के चरणों में झुक गए और बोले कि आप जो कहें, हम वही करने को तैयार हैं। सारंधा ने कहा कि- हमारे मृत शरीर को आप लोग हाथ न लगाएँ, यदि हमारा कोई पुत्र जीवित हो तो हमारे मृत शरीर उसे सौप दें। यह थी भारत की सन्नारियों की आन-बान-शान। रानी सारंधा का नाम इतिहास में अमर है।

मुंशी प्रेमचन्द सारंधा के विषय में लिखते हैं- "अगर अनुभवशील सेनापति राष्ट्रों की नींव डालता है तो आन पर जान देने वाला मुँह न मोड़ने वाला सिपाही राष्ट्र के भावों को उच्च करता है और उसके हृदय पर नैतिक गौरव को अंकित कर देता है। उसे इस कार्यक्षेत्र में चाहे सफलता न हो, किन्तु जब किसी वाक्य या सभा में उसका नाम जबान पर आ जाता है, श्रोतागण एक स्वर से उसके कीर्ति गौरव को प्रतिध्वनित कर देते हैं। सारंधा 'आन' पर जान देने वालों में थी।"

- नवनीत आर्य

नवलखा महल, उदयपुर

SRI RAGHAV DIVYA YOG RESEARCH INSTITUTE

09-07-2020

प्रशस्ति पत्र

क्रमांक सं. SRD-E00021

Online Lecture Series

YOGACHARYA Dr. NARENDRA KUMAR SANADHYA

आप द्वारा "SPIRITUAL YOGA IS AN ASSET GIFTED TO US BY OUR FOREFATHERS/ANCESTORS" विषय पर दिया गया व्याख्यान बहुत ही सारगर्भित और अनुकरणीय रहा है।

एतदर्थ श्री राघव दिव्य योग रिसर्च इन्स्टीट्यूट आपका हृदय से आभार करते हुए आप के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य को न्यास की ओर से ढेरों बधाईयाँ।

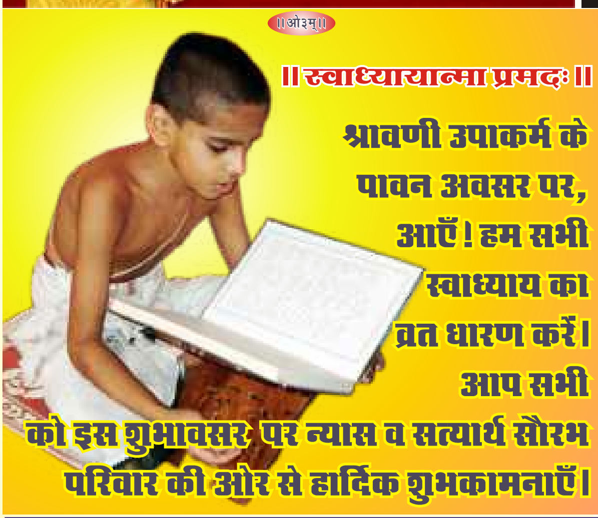

योगीराज श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

आएँ! इस पावन दिवस पर हम सभी योगीराज श्री कृष्ण के चरित्र को आत्मसात् करने का व्रत लें।

स्वास्थ्य

अवसाद (Depression)

किसी करीबी की मृत्यु, रिश्तों में धोखा, शादी का टूट जाना, लम्बे समय की बीमारी, व्यापार में घाटा, नौकरी छूट जाना, परीक्षा में फेल होना, अकेलापन, अत्यधिक खाली समय अथवा सांसारिक तनाव आदि अवसाद के कारण हो सकते हैं। कभी-कभी यह वंशानुगत भी होता है। कुछ मेडिकल कारणों से भी अवसाद हो सकता है। जैसे थॉयराइड (Thyroid) की कम सक्रियता, लम्बे समय तक चलने वाली दवाओं का दुष्प्रभाव और हार्मोनल असन्तुलन आदि।

अवसाद अर्थात् डिप्रेशन आज के आधुनिक समाज में तेजी से जड़ें फैलाता हुआ एक मनोविकार है। यह मनोविकार किसी भी उम्र में तथा किसी को भी हो सकता है। यह रोग पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को अधिक होता है। इसके अलावा वृद्धों में भी प्रायः यह देखने को मिलता है। आजकल तो यह विकार युवाओं को भी बुरी तरह से घेर रहा है। हम सभी स्वभावतः कभी न कभी उदासी और निराशा से ग्रस्त होते हैं परन्तु अवसाद इससे अलग है और यह पागलपन भी नहीं है। इस अवस्था में व्यक्ति लम्बे समय तक निराशा में घिरा रहता है, मन उदास तथा शरीर शिथिल और बेजान मालूम होता है, न किसी काम में मन लगता है न ही जीवन में कोई रुचि रहती है, न भूख-प्यास का आभास होता है और न ही नींद आती है। हर वक्त कुछ बुरा होने का डर लगा रहता है और अजीब सी मायूसी छाई रहती है हर तरफ। जिन कार्यों को करने में कभी खुशी महसूस होती थी वे अर्थहीन व बोझिल लगने लगते हैं। व्यक्ति अकारण ही हीन-भावना अथवा अपराधबोध से ग्रसित रहने लगता है। यदा-कदा आत्मघाती विचार व्यक्ति पर हावी होने लगते हैं। ऐसा रोगी स्वयं को दुनिया से दूर कर लेता है और किसी नाजुक मनःस्थिति में स्वयं को अथवा अन्य किसी को नुकसान भी पहुँचा सकता है। वास्तव में यह स्थिति बहुत कष्टदायक व असामान्य होती है।

पक्के तौर पर इसके कारण बता पाना मुश्किल है। विज्ञान की दृष्टि में अवसाद दिमाग में हुए रासायनिक असन्तुलन की वजह से होता है। जिन्दगी के कड़वे अनुभव जैसे

हमारे जीवन में अवसाद दबे पाँव घुस तो आता है पर फिर जल्दी से जाता नहीं है। शुरू-शुरू में ऐसे रोगी सकारात्मक एवं बातचीत (Cognitive Behavioral

Therapy) एवं पारिवारिक सहयोग से इस बीमारी से निजात पाने में सफल हो सकते हैं। परन्तु यदि Cognitive Behavioral Therapy से लाभ न हो तो डॉक्टरी परामर्श एवं चिकित्सा अनिवार्य होती है।

यदि हम कुछ बातों का ध्यान रखें तो इस घातक बीमारी से बचाव में सफल हो सकते हैं-

१. आशावादी बनें- सुख-दुःख जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं और मनुष्य के जीवन के अभिन्न अंग हैं। इसलिए सुख में अत्यधिक खुशी तथा दुःख में अत्यधिक परेशान होने की बजाए हमें दोनों परिस्थितियों में समभाव लाकर ईश्वर की रजा में राजी रहने का प्रयास करना चाहिए।

२. खाली समय का सही उपयोग करें- अपने खाली समय को परमार्थ के कार्यों, सामाजिक कार्यों अथवा अपने शौक को निखारने में लगाएँ। ऐसे कार्यों में हमें असीम

खुशी एवं तृप्ति महसूस होती है। हर दिन कुछ अच्छा करने की इच्छा हमें उत्साहित रखती है और हमारे जीवन को सम्पूर्णता देती है तथा निराशा हमारे पास नहीं फटकती।

३. अनुशासन का महत्व समझें- इस सृष्टि का कण-कण अनुशासन में बँधा है। जहाँ अनुशासन न हो, वहीं विनाश निश्चित है और यह बात हम मनुष्यों पर भी पूरी तरह लागू होती है। इसलिए हमें अपना हर कार्य कल पर न टाल कर सही समय तथा सही तरीके से करना चाहिए। साथ ही साथ, एक अनुशासित दिनचर्या का अनुसरण करना चाहिए ताकि अनावश्यक खाली समय और खाली दिमाग हमें डिप्रेशन जैसी बीमारी की ओर न धकेल दे।

४. सम्पर्क एवं संवाद - प्रायः देखा गया है कि अलगाव एवं अकेलेपन के कारण यह रोग होने की सम्भावना अधिक होती है। यदि हम लोगों से मिलते-जुलते रहते हैं और बातचीत करते हैं तो बहुत सी मानसिक समस्याएँ शुरू ही नहीं होतीं और यदि शुरू हो भी जाएँ तो उन परेशानियों का सामना करने में सहायता मिलती है।

५. प्रतिस्पर्धा तथा तुलना- प्रतिस्पर्धा एवं नकारात्मक तुलना करने से अनावश्यक तनाव पैदा होता है। यद्यपि हम सब ईश्वर की सन्तानें हैं और अपने आप में अप्रतिम हैं फिर भी हम व्यर्थ ही प्रतिस्पर्धा एवं तुलनात्मक प्रतियोगिता में लगे रहते हैं। यह हमारे अन्दर निराशा, जलन और हीन भावना पैदा करती है, जो धीरे-धीरे अवसाद का रूप ले लेती हैं।

६. अपराध भाव- कई बार हम बीती घटनाओं को लेकर अपराध भाव से घिरे रहते हैं जो धीरे-धीरे हमें अवसाद की दलदल में धकेल देता है। परन्तु हमें समझना होगा कि जो हो चुका उसे बदला नहीं जा सकता और हो सकता है कि उस समय की परिस्थितियों के अनुसार हमारा वही फैसला सही रहा होगा इसलिए भूतकाल के निराशाजनक विचारों को छोड़कर हमें अपने आज पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

७. भोजन- मानसिक स्वास्थ्य के लिए भोजन हल्का व पौष्टिक होना चाहिए, जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन का सही संकलन हो तथा अन्य पोषक तत्व जैसे- ओमेगा ३ फैटी एसिड, एंटीऑक्सीडेंट, कैल्शियम, विटामिन-सी व विटामिन-डी भी उपयुक्त मात्रा में शामिल हों। प्राकृतिक पेय पदार्थ जैसे स्वच्छ जल, नारियल पानी, नीम्बू व लस्सी इत्यादि भी लेते रहना चाहिए। चाय, कॉफी, नशीले पदार्थों, गरिष्ठ भोजन तथा जंक फूड्स से परहेज भी आवश्यक है।

८. नियमित योगाभ्यास एवं ध्यान- मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिए नियमित आसन, प्राणायाम तथा ध्यान करना बहुत कारगर है। नियमित रूप से योगासन,

विशेषतः सूर्य नमस्कार, धनुरासन, उत्तानपादासन, भुजंगासन, उष्ट्रासन, त्रिकोणासन, शवासन, योगनिद्रा आदि बंधों के साथ संयोजन में उज्जायी प्राणायाम, भ्रामरी 'ऊँ' का उच्चारण इत्यादि करने से अत्यधिक लाभ मिलता है। साथ ही साथ, कुछ समय एकाग्रचित्त ध्यान में बैठने तथा ईश्वर के प्रति धन्यवाद का भाव जाग्रत करने से हमारा तनाव कम होता है, शरीर स्वस्थ तथा चित्त प्रसन्न रहता है और अवसाद जैसे घातक मानसिक रोगों से बचाव होता है।

साभार- योग मंजरी

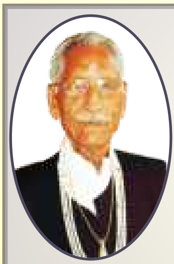

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत रु. 45 में

४००० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

समाचार

आर्य कन्या विद्यालय समिति स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर

आर्य कन्या विद्यालय समिति, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा संचालित संस्थाओं में गरीब एवं कम प्रतिशत वाली लड़कियाँ विद्यालय में पढ़ने आतीं हैं।

कला वर्ग के १२वीं कक्षा में कुल १९९ बालिकाएँ परीक्षा में बैठीं थीं उनमें से १८७ लड़कियाँ प्रथम श्रेणी से पास हुईं, ९४ प्रतिशत लड़कियों का प्रथम श्रेणी में पास होना एक गौरव एवं सम्मान की बात है।

इन बालिकाओं में से ४ बालिकाओं को ९० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त हुए हैं।

१. दीप्ति शर्मा-९३.४0%	२. मुस्कान धानावत-९२. ८%,
३. महक लूथरा-९१. ६0%	४. वाणी जैन-९0.४%

आर्य कन्या विद्यालय में वैदिक संस्कार, उच्च शिक्षा के लिए सभी शिक्षकगण, प्यारी बच्चियाँ उनके अभिभावक सभी साधुवाद के पात्र हैं। आज भी विद्यालय में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से शिक्षा दी जाती है।ऑनलाइन प्रवेश प्रारम्भ है प्रवेश के लिए कार्यालय में संपर्क करें- ०१४४-२७००९३६,२३४८५८२।

– प्रदीप कुमार आर्य

२१ वें कारगिल विजय दिवस पर कृतज्ञ राष्ट्र की श्रद्धांजलि

रविवार २६ जुलाई २०२०, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में २१वें कारगिल विजय दिवस पर ऑनलाइन श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर भारतीय सेना के जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यह कोरोना काल में परिषद् का ९४वां वेबिनार था।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक-अध्यक्ष, एमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि आज हमारे ओजस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश महाशक्ति बनने की ओर आगे बढ़ रहा है। हमें भारत को सैनिक शक्ति, आर्थिक शक्ति और मानव संसाधन को मजबूत करके देश को मजबूत बनाना है कि कोई भारत की ओर आँख उठाकर न देख सके। डॉ. चौहान ने शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हमें भारतीय सेना पर गर्व है हमारी मजबूत सेना हर परिस्थिति में देश की रक्षा करने में सक्षम है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज युवाओं को देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत करने की आवश्यकता है। आज कई जगह विद्रोह का स्वर सुनाई देता है उसे सख्ती से कुचलने की आवश्यकता है, भारत मे रहकर, यहाँ का खा-पी कर विदेशी गुणगान करने वाले देश भक्त नहीं हो सकते।

मेजर जनरल (रिटायर्ड) श्री आर. के. एस. भाटिया जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इस सफल आयोजन के लिए सभी को बधाई दी। आर्य नेता आनन्द चौहान व कर्नल तेजेन्द्र पाल त्यागी जी ने कारगिल में शहीद सैनिकों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता, अनिता आर्या, संगीता आर्या, पुष्पा चुघ, वन्दना जावा, मधु खेड़ा आदि ने देश भक्ति पूर्ण गीत सुनाये ।

प्रमुख रूप से आचार्य महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़), देवेन्द्र भगत, नरेन्द्र आर्य 'सुमन', दुर्गेश आर्य, जगदीश मलिक, वीना वोहरा, रचना आहूजा, देवेन्द्र गुप्ता, राजेश मेहंदी रत्ता, आस्था आर्या, प्रेम सचदेव, ओम सपरा आदि उपस्थित थे।

– अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, एन-२२,डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-११०००९
संपर्क- ९८१०११७४६४

हम जालौर वासियों के लिए गर्व का क्षण है। मेरे बचपन के मित्र एवं छोटे भाई के समान जिनका जालौर में बचपन बीता, भारतीय सेना के

जांबाज लड़ाकू फाइटर पायलट विंग कमांडर श्री अभिषेक त्रिपाठी पुत्र श्री अनिल कुमार त्रिपाठी लड़ाकू विमान राफेल के टेक ऑफ से पहले फ्रांस में भारतीय राजदूत से बातचीत करते हुए टेलीविजन पर देख कर गर्व से सीना चौड़ा हो गया। आशु हमको आप पर नाज है। हम आपके यशस्वी एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते हैं। और आप इसी प्रकार समर्पण भाव से देश की सेवा करते रहे। आपके कैरियर को परवान चढ़ाने वाले आपके माताजी-पिताजी को बहुत-बहुत सादर नमन। अभिनन्दन।

– शिवदेव आर्य

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
रु.100 के स्थान पर अब रु.45 में उपलब्ध
सौ प्रतियाँ लेने पर रु.4000
(डाक खर्च अतिरिक्त)

रु.15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

हलचल

नई दिल्ली। जुलाई २६, २०२०। विश्व हिन्दू परिषद् कार्याध्यक्ष एडवोकेट श्री अलोक कुमार ने आज कहा है कि हमको श्री उद्धव ठाकरे का वक्तव्य देखकर आश्चर्य हुआ है जिसमें उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि के लिए भूमि पूजन को वीडियो-कान्फ्रेंसिंग से कराने का सुझाव दिया। यह सुझाव केवल एक अन्धे विरोध करने की भावना से आया है। उन्होंने कहा कि यह शिवसेना का कैसा पतन है जिसे कभी श्री बाला साहब ठाकरे ने प्रखर हिन्दुत्व की राजनीति के लिए गढ़ा था। भूमि पूजन भवन-निर्माण के पहले एक आवश्यक और पवित्र रस्म है। भूमि को खोदने से पहले पृथ्वी माँ की पूजा की जाती है, उनसे आशीर्वाद माँगा जाता है। यह काम दिल्ली में बैठ कर वीडियो कान्फ्रेंसिंग से नहीं किया जा सकता।

विश्व हिन्दू परिषद् ने हमेशा स्पष्ट किया है कि भूमि पूजन के कार्यक्रम में केवल २०० लोग ही रहेंगे और सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के सारे निर्देशों का पालन किया जायेगा। इस स्थिति में सार्वजनिक स्वास्थ्य के बारे में श्री ठाकरे की चिन्ता विरोध करने के लिए रचा गया ढोंग मात्र है।

– विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता, विश्व हिंदू परिषद्

शोक-संवेदना

अत्यन्त दुःख का समाचार है कि न्यास के पूर्व कोषाध्यक्ष स्मृतिशेष श्री लालचन्द जी मित्तल की पुत्रवधु एवं वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल जी मित्तल की भाभी तथा महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर के संचालक व महर्षि दयानन्द की विचारसरणि को अधुनातन प्रकार से प्रसारित करने में सदैव प्रयत्नरत आदरणीय भाई श्री सुरेश मित्तल की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष का स्वर्गवास दिनांक १६ जुलाई २०२० को हो गया। हम न्यास के सभी न्यासी सहसा उत्पन्न हुए इस शून्य से स्तब्ध हैं। शोकाकुल परिवार के दुःख में अपने को सहभागी समझते हुए, परम कारुणिक प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को वह भक्ति शक्ति प्रदान करें जिससे वे इस कठिन समय में धैर्य धारण कर सकें।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से श्रीमति संतोष जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

– अशोक आर्य, उदयपुर

आर्यसमाज, घाटकोपर, मुम्बई के प्रधान और श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी के दामाद श्री दिलीप जी के पिताजी– 'श्री विश्राम शीवगुन वेलानी जी' (आयु ६० वर्ष) का देहावसान पर्थ-पश्चिम आस्ट्रेलिया में, दिनांक २३ जुलाई २०२०, गुरुवार को हो गया।

आप ने आर्य समाज, घाटकोपर मुम्बई को लगभग १५ वर्षों तक कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। आप अपने पीछे वैदिक धर्मानुरागी पुत्र-पौत्रों को छोड़कर गए हैं। जो अपने पूरे जोश के साथ 'वैदिक धर्म' के प्रचार में संलग्न हैं।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार ईश्वर से उनकी सद्गति और परिवार को वियोग-दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना करता है।

अग्निहोत्री जी चले गए

सुप्रसिद्ध वैदिक उपदेशक, जिन्होंने आर्यसमाज में रचनात्मक तथा निर्माणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए सफलतापूर्वक अनेक परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया, का निधन, दिनाक २५ जुलाई २०२० को अपने पैतृक निवास स्थान किशनगढ़ में प्रातः ७ बजे हो गया। आदरणीय अग्निहोत्री जी ने यूँ कोई उच्च शिक्षा प्राप्त

नहीं की थी, परन्तु स्वाध्याय के महत्त्व को स्थापित करते हुए उन्होंने अपने आप को इतना सक्षम बना लिया कि उन्हें वैदिक सिद्धान्तों का मर्मज्ञ कहना समुचित ही है। आमजन के हृदय को स्पर्श करे ऐसी सरल व सुमधुर शैली में प्रवचन एवं निज जीवन में कथनी व करनी में पूर्ण साम्य, पंडित जी के व्यक्तित्व की विशेषता थी। अत्यन्त विपन्न स्थितियों में भी उन्होंने प्रभु भक्ति के सहारे साहस व उत्साह का दामन नहीं छोड़ा और मंदिरों में चित्रकारी के माध्यम से जीविकोपार्जन करते हुए भी ऋषि-मिशन के प्रति समर्पित रहे। न्यास के अनेक कार्यक्रमों में भी पंडित जी ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनका चले जाना आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। न्यास के सभी सदस्यों की ओर से पंडित कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

– भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास, उदयपुर

श्री वीरेन्द्र मित्तल जी का निधन

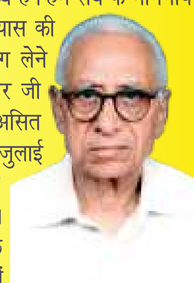

अत्यन्त ही दुःखद समाचार सुनकर हम सब स्तब्ध हैं। हम सब के माननीय बुजुर्ग, उदयपुर के आर्य जगत् के गौरव, इस न्यास की सभी गतिविधियों में श्रद्धेय माताजी सहित भाग लेने तथा सम्बल प्रदान करने वाले श्री वीरेन्द्र कुमार जी मित्तल (उदयपुर के ख्यातनाम चिकित्सक डॉ. असित मित्तल के पूज्य पिताजी) का निधन दिनांक ३० जुलाई २०२० को दिल्ली में हो गया है। श्री मित्तल की सहस्रों स्मृतियाँ मन-मष्तिष्क में उमड़ रही हैं। क्या किया जाय विधाता के इस अटल विधान के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया जा सकता। कोरोना-काल की विशिष्ट स्थितियों के कारण उनके सभी स्नेहियों से निवेदन है कि वे व्यक्तिगत रूप से ही दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सत्कर्मों के अनुरूप सद्गति प्रदान करने हेतु परमेश प्रभु के चरणों मे विनय करें। आएँ! हम सभी उनके सादगी, स्नेह तथा सहृदयता जैसे गुणों को अपने जीवन में धारण करें।

हम न्यास के सभी न्यासीगण, उदयपुर के आर्यजन तथा सत्यार्थ सौरभ के सभी सदस्यगण परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि मित्तल परिवार को वह शक्ति-भक्ति प्रदान करें कि वे इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन कर सकें। उदयपुर आर्य जगत् की ओर से शोक संवेदना सहित। – नारायण मित्तल

कर्म-फल अवश्य भोगना पड़ेगा

परमेश्वर के अटल नियम के सम्बन्ध में कहा गया है- **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'**- किसी भी स्थिति में यह सिद्धान्त शिथिल हो ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। पर आज 'विशेष अनुग्रह' के राही अपने कर्मों को सुधारने में प्रयत्नशील नहीं हैं और समाज में अनाचार बढ़ रहा है। इसी अनुपात में 'विशेष अनुग्रह' प्राप्तार्थ तथाकथित धार्मिक आडम्बर बढ़ रहे हैं। इन दोनों विपरित धाराओं का साथ, हमारी बात का प्रमाण है। एक उदाहरण देकर इस प्रकरण को समाप्त करेंगे। भारतीय राजस्व सेवा का एक उच्चाधिकारी करोड़ों रुपये की रिश्वत लेने के सन्दर्भ में पकड़ा गया, पता चला कि वह दस लाख रुपये सलाना एक मन्दिर विशेष में चढ़ा देता था। इस मानसिकता को आप क्या कहेंगे? अतएव देव दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में पाप विमोचन की हानि दर्शाते हुए लिखते हैं-

जैसा कर्म-वैसा फल-

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममभान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।।

- अथर्ववेद १२/३/४८

प्रभु की न्याय-व्यवस्था में कोई दोष नहीं है। उसकी न्याय व्यवस्था में न सिफारिश चलती है न मित्र ही कोई सहायता कर सकते हैं। वहाँ तो पूर्ण न्याय है जो जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा।

(ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा नहीं करता) 'क्योंकि जो पाप क्षमा करे, तो उसका न्याय नष्ट हो जावे और सब मनुष्य महापापी हो जायँ, क्योंकि क्षमा की बात सुन ही के उनको पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाए। जैसे राजा अपराध को क्षमा कर दे, तो वे उत्साहपूर्वक अधिक-अधिक, बड़े-बड़े पाप करें, क्योंकि, राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उनको भी भरोसा हो जाए कि राजा से, हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे और जो अपराध नहीं करते वे भी अपराध करने से, डरकर पाप करने में प्रवृत्त हो जाऐंगे। इसलिए सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है, क्षमा करना नहीं। (सप्तम समुल्लास)

जीव की स्वतंत्रता?

प्रायः यह कह दिया जाता है कि हम परमपिता परमात्मा की कठपुतलियाँ हैं। जिधर और जैसे वह नचाता है हमें नाचना ही पड़ता है। साधारण दृष्टि में सामान्य व सही प्रतीत होने वाले इस अभिकथन में गम्भीर सिद्धान्त हानि है। जीव कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र है। ज्ञान, चेतना, प्रयत्न उसके स्वाभाविक गुण हैं। अगर वह कर्म करने में स्वतंत्र न हो तो इन स्वाभाविक गुणों का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा और दूसरे शब्दों में कहा जाय तो जीव, जीव ही न रहेगा। अतएव यह सत्य है कि जीव किसी भी अच्छे या बुरे कार्य को करने, न करने या उलटा करने में पूर्ण स्वतंत्र है। अगर ऐसा न मानें तो अच्छे-अच्छे कार्य करने तथा पाप कर्म न करने के समस्त उपदेश ही व्यर्थ हैं क्योंकि इस प्रकार के उपदेश कर्त्ता हेतु ही सार्थक हैं। अगर जीव कर्म करने में स्वतंत्र न हो तो उसमें और यांत्रिक मशीन में अन्तर ही क्या रह जायेगा?

स्वतंत्र कर्त्ता न मानने की स्थिति में जीव किये हुए कर्म के फल भोगने के दायित्व से भी मुक्त हो जावेगा। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं- 'जो स्वतंत्र न हो तो उसको पाप-पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता, क्योंकि जैसे भृत्य स्वामी और सेना सेनाध्यक्ष की

आज्ञा अथवा प्रेरणा से युद्ध में अनेक पुरुषों को मारके भी अपराधी नहीं होते, वैसे परमेश्वर की प्रेरणा और अधीनता से काम सिद्ध हों तो जीव को पाप व पुण्य न लगे। उस फल का भागी भी प्रेरक परमेश्वर होवे। नरक-स्वर्ग अर्थात् दुःख-सुख की प्राप्ति भी परमेश्वर को होवे।'

'परमेश्वर ही जीव से सारे कार्य कराता है, जीव कर्म करने में स्वतंत्र नहीं' यह मानने पर यह भी मानना होगा कि आज जितने भी अनाचार और अमानवीय, रोंगटे खड़े कर देने वाले पाप हो रहे हैं वह भी ईश्वर ही करा रहा है। ऐसा कभी हो नहीं सकता क्योंकि ईश्वर पूर्ण पवित्र है। अतः सत्य ही है कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

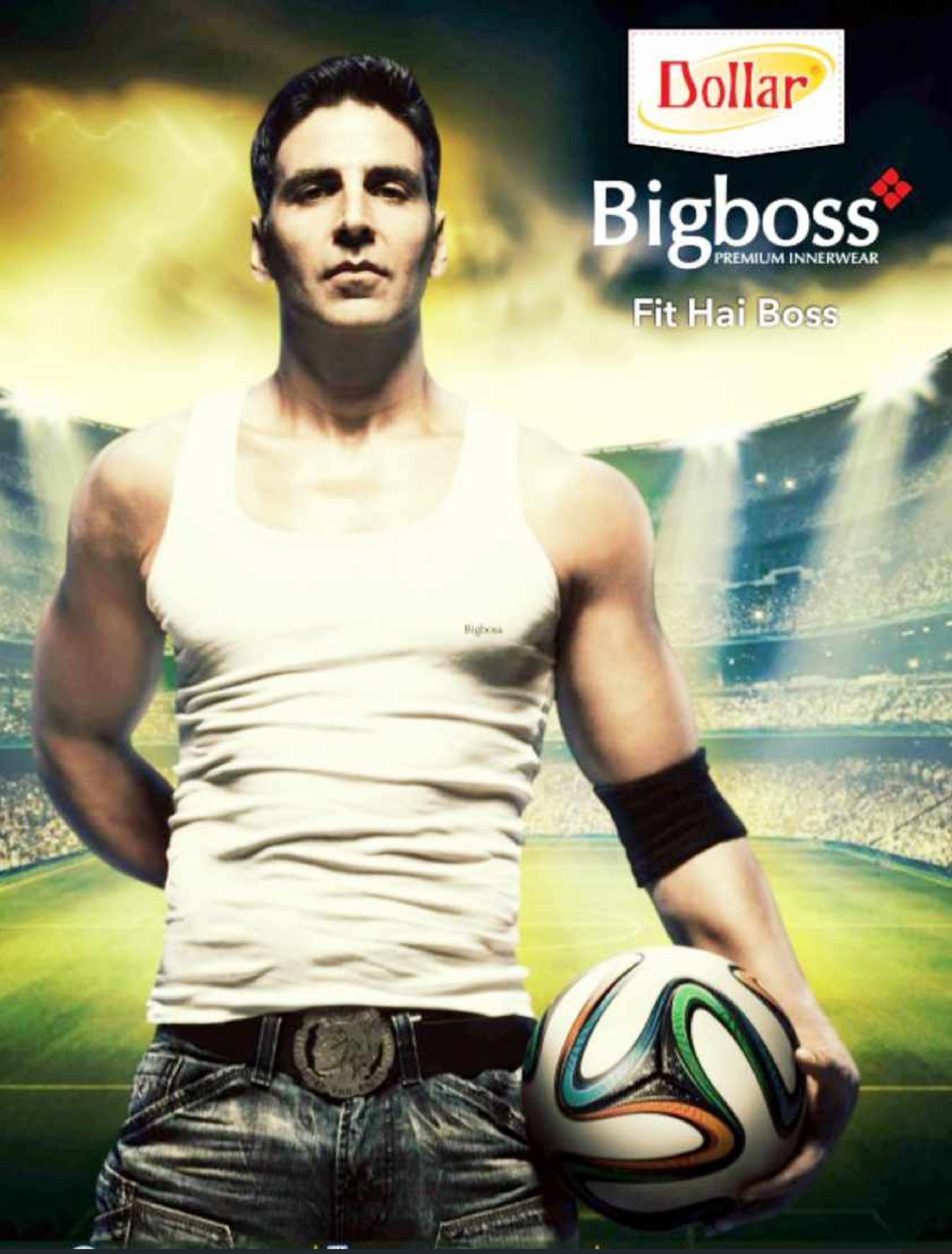
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

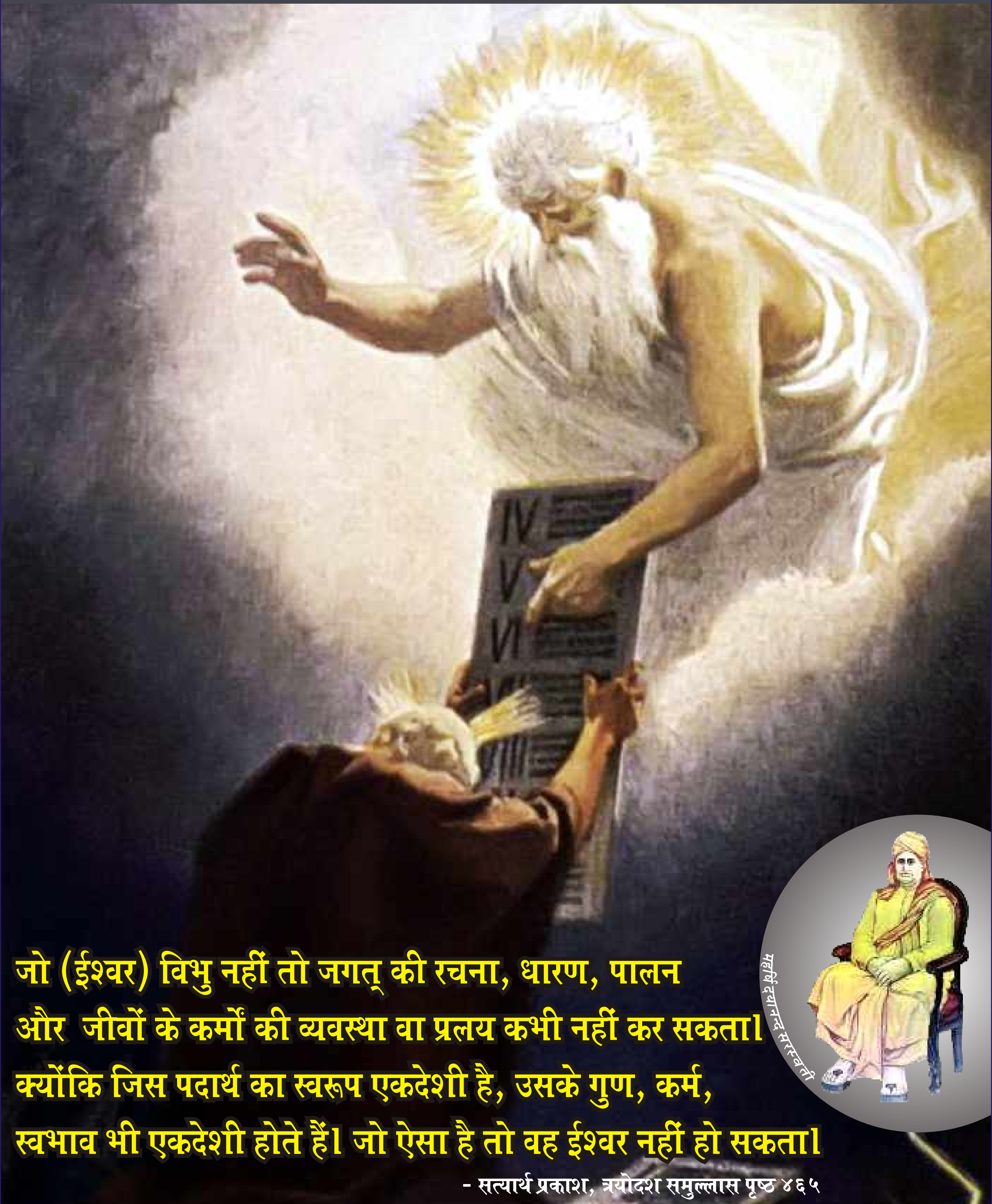

जो (ईश्वर) विभु नहीं तो जगत् की रचना, धारण, पालन और जीवों के कर्मों की व्यवस्था वा प्रलय कभी नहीं कर सकता। क्योंकि जिस पदार्थ का स्वरूप एकदेशी है, उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी एकदेशी होते हैं। जो ऐसा है तो वह ईश्वर नहीं हो सकता।

- सत्यार्थ प्रकाश, त्रयोदश समुल्लास पृष्ठ ४६५

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर